।। श्री सीतारामाभ्यां नमः ।।

।। श्रीमते रामानन्दाचार्यय नमः ।।

।। श्री हनुमते नमः ।।

श्री हनुमद् आराधना

॥ श्री सीतारामाभ्यां नमः ॥

॥ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः॥

॥ श्री हनुमते नमः॥

श्री हनुमद् आराधना

प्रकाशक

श्रीजी विद्या मन्दिर, मथुरा

फोन नं० 9045050499

Email : info.sjvm@gmail.com

मूल्य : 100/- रु० मात्र

विषय-सूची

***

परिचय

निगमागम सिद्धान्त प्रतिपाद्य परात्पर तत्व विशारद त्रिविधाताप संतप्त जन जीवन रक्षण समर्थ सद्गति सन्मति सद्भक्ति वितरण श्रीहनुमानजी महाराज को सभी शास्त्रों एवं पुराणों में एकादश रुद्रावतार तथा साक्षात् परब्रह्म स्वरूप ही माना गया है। श्री केशरी राजकिशोर प्रातः स्मरणीय अंजनी देवी गर्भ सम्भूत भक्ति रसामृत सिन्धु दीनबन्धु श्रीहनुमानजी महाराज के परम पावन चरित्रावली से समस्त आर्ष ग्रन्थ एवं पौराणिक गाथाओं में उनका अमलविमल सुमधुर चरित्र विश्वविख्यात है। अस्तु आञ्जनेय की आराधना से साधक की समस्त इच्छायें अवश्य पूरी होती हैं। यंत्र, मन्त्र एवं तन्त्र की साधना परम्परा में आपकी कृपा परमापेक्षित है। आप को अतुलनीय शक्ति सामर्थ्या भगवती मैथिली के द्वारा वरदान प्राप्त है।

यथा- अजर-अमर गुण निधि सुत होहू ।
करही बहुत रघुनाथ छोहू॥
अथवा अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस वर दीन्ह जानकी माता॥

आदि शक्ति के अमोघ वरदान को प्राप्त कर भगवत जनों के समस्त दुःखों को दूर करने की अलौकिक शक्ति इन्हीं में दिखती है। भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, ब्रह्मराक्षस, भैरवादि एवं महामारी गण भी जिनके हुंकार मात्र से सामर्थ्य हीन हो जाते हैं। अतेव साधक को जप और पाठ श्रद्धा और विश्वास पूर्वक करना चाहिए, क्योंकि विश्वास ही सर्वाधिक फलदायी होता है। यथा

'कवनेउ सिद्धि की बिनु विश्वासा।'

सन्त शिरोमणि कविकुल कमल दिवाकर प्रातः वन्दनीय गोस्वामी श्री तुलसीदासजी महाराज द्वारा विरचित द्वादश ग्रन्थों में श्रीहनुमानचालीसा, बजरंग-बाण एवं हनुमान-बाहुक नामक ग्रन्थ है। इनके साथ ही परम सिद्ध एवं श्री हनुमंतलाल जी की कृपा प्राप्त संत श्रीभगवानदासजी महाराज कृत श्रीहनुमान ग्यारहवीं स्त्रोत तथा श्री हनुमान जी की ही अवतार समर्थ रामदास जी द्वारा रचित संकष्ट निरसन, आनन्दकन्द, सच्चिदानन्द भगवान श्रीराघवेन्द्र सरकार कृत एक मुखी एवं पंचमुखी कवच के साथ-साथ अनेकानेक स्त्रोत तथा मंत्र भी इसमें दिये गये हैं जिसके पाठ से असाध्य रोगी रोग से मुक्त हो जाता है। निर्धन धनवान, कम बुद्धि वाला विद्यार्थी परीक्षा में पास, काफी दिनों से उलझे मुकदमें का सुलझ जाना एवं अनेकानेक प्रकार के मनोरथों की सिद्धि होती पायी गयी है। इसलिए अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष के इच्छुक श्रीहनुमानजी के भक्तों को इसका विधिवत् अनुष्ठान करना चाहिए।

विनीत
रामजी दास रामायणी
गोकुल भवन, श्रीअयोध्याजी

माला-जप विधि

जप माला को प्रथम ताम्र पत्र में रखकर गंध पुष्पादि से पूजन करे ॐ माले २ महामाले सर्व शक्ति स्वरूपिणी। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तामाच्यं सिद्धिदा भव ॥ पुनः 'अविघ्नं कुरू माले त्वं सर्व कार्येषु सर्वदा' अब माला को गौ-मुखी में रखकर दाहिने हाथ से धारण करें तथा हृदय पर रखकर अपने इष्ट का ध्यान करते हुए एकाग्रचित से मंत्र का अर्थ समझते हुए तथा क्रोधादि दोषों से रहित होकर होंठों को धीरे-धीरे चलाते हुए मध्यमा अंगुली के मध्य पोर पर माला रखकर सुमेरू का उलंघन न करते हुए प्रेम-पूर्वक जप करना चाहिए।

यद्यपि जप किसी भी प्रकार से क्यों न किया जाय परिणाम में कल्याण की ही सृष्टि करता है। परन्तु जप के साथ यदि उसके अर्थ का भी चिन्तन किया जाय तो जप सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। पातंजलि योग-दर्शन में इसका वर्णन इसी रूप में किया गया है

'जपस्तदर्थ भावनम्'

इस अर्थ भावना में ही ध्यान का समावेश हो जाता है। साधारण जप की प्रक्रिया में केवल जिह्वा का प्रयोग किया जाता है। किन्तु जप के साथ ध्यान को सम्मिलित कर लेने पर जिह्वा के साथ-साथ मन का भी संयोजन स्वतः हो जाता है। केवल जिह्वा से जप करते हुए यह भ्रम बना रहता है कि मन की सन्धि क्षुद्र असद् विचार अन्तःकरण में प्रविष्ट न हो जाय। जप के साथ ध्यान का आश्रय ले लेने पर साधक इस भय से मुक्त हो जाता है। मन की एकाग्रता के लिए दृष्टि को भी स्थान विशेष में केन्द्रित किया जाना चाहिए।

देव अनुष्ठान करने के नियम

१. भूमि या तख्त पर शयन,२. ब्रह्मचर्य का पालन, ३. मौन धारण, ४. गुरु को सेवा, ५. त्रिकाल स्नान, ६. पाप कर्मों का त्याग, ७. नित्य पूजन, ८. नित्य दान, ९. देवता की प्रार्थना एवं कीर्तन, १०. इष्ट तथा गुरु में विश्वास, ११. जप में निष्ठा। जो इन नियमों का पालन करता है, उसका ही मंत्र सिद्ध होता है।

अनुष्ठान के भी पाँच अंग माने गये हैं-

१ . जप, २. होम, ३. तर्पण, ४. अभिषेक, ५. ब्राह्मण भोजन। नित्य प्रति या जपानुष्ठान् के अन्त में जप के दशांश हवन, हवन के दशांश तर्पण, तर्पण के दशांश अभिषेक और यथा-शक्ति ब्राह्मण भोजन कराकर दक्षिणा दें। यदि हवन, तर्पण आदि सम्पन्न न हो सके तो दशांश जप और करना चाहिए।

पाठ-विधि

इस ग्रन्थ से जिसका भी आप पाठ करना चाहें. पहले अपने मन में ११ दिन, २१ दिन अथवा ४९ दिन या १०० दिन के पाठ का निश्चय कर लें। तत्पश्चात् श्री हनुमानजी की प्रतिमा या चित्र के सामने अपनी सुविधा के अनुसार घर अथवा मन्दिर में जहाँ कहीं भी उपलब्ध कर सकें बैंठे। पुनः धूप-दीप और नैवेद्य का भोग लगावें। नैवेद्य में बेसन का लड्डू और पंचमेवा का भोग उत्तम है। गरीब लोग शुद्ध पचास ग्राम गुड़ का ही भोग अर्पण करें। इसके पश्चात् मन लगाकर एक तीन या ग्यारह पाठ प्रतिदिन करने से श्री हनुमान जी अभीष्ठ मनोरथ को अतिशीघ्र पूर्ण करते है।

हवन-विधान

तिल से आधा चावल, चावल से आधा जौ, जौ से आधा तगर, घृत, पंचमेवा, बेलगिरी, गुगुल यह सब मात्रानुसार डालें। यह साकल्य तैयार हो गया। अग्नि प्रज्ज्वलित कर नीचे लिखे मंत्र से अग्नि का ध्यान करें।

"ॐ चत्वारि श्रृंगात्रयो अस्य पादा द्वै शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो यत्यां-मत्यां आविवेश।"

ॐ मुखं यः सर्व देवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा।
पितृणां च ममस्तुभ्यं विष्णवे पावकात्मने॥

प्रार्थना:-ॐ अग्ने शाण्डिल्य गोत्र मेषध्वज मम सम्मुखोभव 'ॐ पावकत्मने नमः' इस मन्त्र से अग्नि का पूजन करें और तर्जनी तथा कनिष्ठिका को अलग रखते हुए दाहिने हाथ से हवन करें। समस्त देवों को तीन-तीन आहुति प्रदान करें।

ॐ भूर्भवः स्वः श्री रामचन्द्र ऋषयः स्वाहा॥ ३
ॐ भूर्भुवः स्वः ह्रौं स्वाहा॥३
ॐ भूर्भुवः स्वः हस्फ्रें स्वाहा॥३
ॐ भूर्भुवः स्वः रूफ्रें स्वाहा॥३
ॐ भूर्भुवः स्वः ह्स्त्रों स्वाहा॥३
ॐ भूर्भुवः स्वः ह्स्ख्फ्रें स्वाहा॥३
ॐ भूर्भुवः स्वः ह्सौं स्वाहा॥३
ॐ भूर्भुवः स्वः रामभक्ताय स्वाहा॥३
ॐ भूर्भुवः स्वः महातेजसे स्वाहा॥३

ॐ भूर्भुवः स्वः कपिराजाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः महाबलाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः द्रोणाद्रिहारकाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः मेरूपीठकार्चनकारकाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षिणाशाभास्कराय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वविघ्ननिवारकाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः सुग्रीवाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः अंगदाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः नीलाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः जाम्बवते स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भवः स्वः नलाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः सुषेणाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः द्विविदाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः मैन्दाय स्वाहा ॥ ३

ॐ भूर्भुवः स्वः मूलं ...... स्वाहा

यह आहुति इष्ट मंत्र जप के दशांश दें और 'प्रार्थना' पढ़कर पूर्ण आहुति प्रदान करें।

प्रार्थनाः-

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्तजिह्वा सप्त ऋषयः सप्तधाम प्रियाणि। सप्त होत्रा सप्तधात्वा यजन्ति सप्तयोनीरापृणस्व धृतेन स्वाहा।

तत्पश्चात् आरती करें-

"कर्दली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरतिक्यं महं कुर्वे पश्य में वरदो भव॥"

ॐ भूर्भुवः स्व. श्री हनुमते नमः कर्पूरात्रिकं समर्पयामि।

इसके बाद प्रदक्षिणा, पुष्पांजलि तथा प्रार्थना करें

प्रदक्षिणा मंत्रः-

यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणां पदे-पदे। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री हनुमते नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि॥

पुष्पांजलि मंत्र-

नाना सुगंध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च। पुष्पांजलिम् मया दत्तं गृहाण परमेश्वरः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री हनुमते नमः पुष्पांजलि समर्पयामि॥

प्रार्थना-

यदुक्तं यदि भावेन पत्रं, पुष्पं, फलं, जलं निवेदितं च नैवेद्यं गृहाणत्वनुकम्पया॥

मंत्रहीन क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णम् तदस्तु मे॥
पापोहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहिमां पुण्डरीकाक्षः सर्व पाप हरो भवः॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि त्वंगतिः परमेश्वरः॥

हाथ में जल लेकर

"अनेन कृतेन श्री हनुमत देवता प्रियतां मम"

देवता के दाहिने हाथ की भावना करके जल छोड़ देना चाहिए।

श्रीअयोध्याजी हनुमानगढ़ी में श्री हनुमानजी की स्थापना विषयक पद

एक मास निज गमन के पहले जगहित प्रभु यह कीन्ह विचारा।
श्री अवध में श्री हनुमान की प्रतिमा निज हरि हाथ पधारा॥
श्याम पाषाण की प्रतिमा सुन्दर श्री विश्वकर्मा आय सँवारा।
सुरमुनि का वरदान उन्हें यह छिन में रच देवे जग सारा॥
बड़ी भीड़ स्थापन में भई सुरमुनि कीन्हों जय-जयकारा।
चारों वेद कृत्य करवायों तीन दिवय भयों हा-हाकारा॥
पवन तनय की शक्ति मूर्ति में भई प्रवेश मंत्र के द्वारा।
बोली मूर्ति काह आज्ञा है तब हरि काहो हरो जग भारा॥
ब्रह्माजी के दिन भर रहने की आशिष दै शिर पर कर धारा।
श्री कलियुग के अंत के प्राणिन मूरति जानों अंगुल बारा॥
भूषन बसन स्वर्ण मणि मोती हयगज धेनु दीन्ह करतारा।
याचक सकल अयाचक तन मन अवध में छायों हर्ष अपारा॥
भाँति-भाँति पकवान मिठाई मेवा फल पायो नर दारा।
पशु-पक्षी जल-जीव विपिन के पायों मोहन भोग अपारा॥
जाको जैस अहार हमेशा वैसे वाको स्वाद डकारा।
धरती अगिन प्रकाश पवन जल दिव्य रूप धरि बने सुआरा॥
सुरमुनि लोक देशपुर वनगिरि सागर सरितन भई ज्यौनारा।
असुर नाग जड़नर तन धारयो लखि शारद फणपति हिय हारा॥
यह आनंद नहीं वरणि सेरावै हरि की लीला अपरम्पारा।
तन मन प्रेम से दर्शन पूजन करै जौन हावै भव पारा॥

दोहा -

कोस चौरासी अवध में बरसायो सुरफूल।
हाट-बाट द्वारे भवन सम सोहैं शुभ फूल॥
रामनाम को जानि ले सतगुरू से जो कोय।
राम सुन्दर दास कह चरित लखै यह सोय।

दिव्य ग्रन्थ से उद्धृत

दीप-दान विधि

गेहूँ, तिल, उर्द, मूँग और चावल ये पाँच अन्न उत्तम हैं। इसका आटा बनाकर दीप बनावें। वशीकरण में चावल, मारण में उर्द, उच्चाटन में जौ, आकर्षण में मूँग तथा ल़क्ष्मी प्राप्ति के लिए इलायची, लौंग, कपूर, कस्तूरी का दीप बनावें अगर यह वस्तु उपलब्ध न हो तो ऊपर बताये हुए पाँच अन्न का ही दीपक बनावें। केवल श्री हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए ताम्र पात्र में गऊ के घृत का नित्य दीपक प्रज्ज्वलित करना चाहिए।

तिल के तेल से लक्ष्मी की प्राप्ति एवं पार्थक के आगमन (आकर्षण) सरसों के तेल से सर्व रोगों का नाश, राई के तेल से मारण एवं महुआ के तेल से विद्वेषण होता है।

श्री हनुमानजी की प्रसन्नता के लिए लाल रंग की बत्ती, मारण तथा उच्चाटन में काले रंग के सूत की बत्ती, लक्ष्मी प्राप्ति के लिए सफेद रंग बत्ती, रोग नाश के लिए पीले रंग बत्ती तथा युद्ध के लिए हरे रंग के सूत की बत्ती का प्रयोग करना चाहिए। श्रीहनुमानजी की प्रतिमा के समीप अथवा सालिग्राम जी की प्रतिमा के समीप श्रीहनुमत दीप दान किया जाता है। घोर संकट से बचने के लिए

श्री गणेश जी तथा विष्णु भगवान के समीप दीप-दान करें।

जप कार्य पूरब मुख, लक्ष्मी प्राप्ति में पश्चिम मुख, वशीकरण में उत्तर, मारण तथा उच्चाटन में दक्षिण तथा पुत्र प्राप्ति के लिए जल में दीप दान करें।

'ॐ ह्रौं रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमत प्रचोदयाद'।

इस गायत्री मंत्र से दीप को अभिमंत्रित करें।

आसन-विधि

यदि कच्ची जमीन हो तो गोबर और मिट्टी को मिश्रित करके चौका लगावें। पक्का फर्श हो तो जल से धोकर नीचे लिखे मन्त्र को बोलकर पृथ्वी से प्रार्थना करें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय माँ देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

१. कुश के आसन पर बैठकर जप करने से आयु की वृद्धि तथा आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।
२. व्याघ्र तथा मृग चर्म पर लक्ष्मी एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है।
३. दूर्वा के आसन पर बैठकर जप करने वे वंश की वृद्धि होती है।
४. सफेद कम्बल पर बैठकर जप करने से मन की एकाग्रता एवं सभी प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति होती है।
५. वस्त्र के आसन पर दरिद्रता की वृद्धि होती है।
६. जमीन पर बैठकर जप करने से शोक की प्राप्ति होती है।
७. शिला (पत्थर) पर बैठकर जप करने से रोग की उत्पत्ति होती है।
८. लकड़ी पर बैठकर जप करने से जप व्यर्थ जाता है।

अप सर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भुवि संस्थिताः।
ये भूताः विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञा॥
ॐ अनन्तासनाय नमः। ॐ विमलासनाय नमः।
ॐ पद्मानासनाय नमः। कहकर आसन पर बैठें।
आसनं मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः।
कुर्मो देवता आसनोपवेसने विनियोगः॥
कहकर पृथ्वी पर जल छोड़ें तथा निम्नलिखित मंत्र पढ़ें
ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय माँ देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥
आसन पर उत्तर मुँह होकर बैठें, आचमन करें, तथा प्रणव (ॐ) का उच्चारण करता हुआ प्राणायाम एवं गुरुदेव का ध्यान करें।

श्री हनुमत् मंत्र प्रयोगः

ॐ अस्य श्री हनुमंत्रस्य श्री रामचन्द्रः ऋषिः जगतीच्छन्दः हनुमान देवता ह्रौं बीजं ह्स्फ्रें शक्ति हनुमत् कीलकम् हनुमत देवता जपे (पाठे) विनियोगः॥

इस विनियोग को पढ़कर जल छोड़ें पुनः न्यास करें।

ऋष्यादि न्यासः

श्री रामचन्द्र ऋषये नमः शिरसि।
जगतीच्छन्द से नमः मुखे॥
ह्रौं बीजाय नमः गुह्ये।
श्री हनुमते कीलकाय नमो नाभौ॥
विनियोगाय नमः अंजली।

करन्यास तथा अंगन्यास

ॐ ह्रौं अनुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः)
ॐ ह्स्फ्रें तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा)
ॐ ह्स्फ्रें मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्)
ॐ ह्स्फ्रें अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हु)
ॐ ह्स्फ्रें कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्राय वषट्)
ॐ हंसौ करतलकर पृष्ठभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)

अथ ध्यानम्

मंगल मूरति मारुत नंदन। सकल अमंगल मूल निकंदन॥
पवन तनय संतन हितकारी। हृदय विराजत अवध बिहारी॥
मातु पिता गुरु गनपति सारद। सिवा समेत संभु सुक नारद॥
चरण बंदि विनवों सब काहू। देहु रामपद नेह निबाहू॥
बन्दौं राम लखन वैदेही। जे तुलसी के परम सनेही।

प्रार्थना

जै हनुमान् कृपालु दयालु करौं विनती हमरी सुनि लीजै।
राम सिया पद पंकज प्रेम यही वरदान दया करि दीजै॥
जो प्रभु चूक परी कछु मो सों सो तुम चित्त नहीं कछु दीजै।
भेद न जानत हौं गण को कह मंगल दीन सुधार करीजै॥१॥

हौं अति दीन मलीन दुखी निसिवासर पाप करौं दिन घाटै।
डोलत हौं चहुँ ओरन ढोलन जाऊँ जहाँ तहँ वँह सब डाँटै॥
सो लखते मन सोच करौं प्रभु यह दुःख कौन तुम्हैं बिन बाँटै।
बेगि दया करि मंगल दीन पै संकट मोचन संकट काटै॥२॥

पाँय परौ विनती जो करौं प्रभु बेगि हरौ यह कष्ट हमारो।
जैसे सहाय भये सब दासन तैसे मोर गरीबी सुधारो॥
मैं तो हुँ अति बुद्धि कै हीन सुनो कवि बालक मंद अजान विचारो।
हे हनुमान कृपा करके अब मंगलदीन की ओर निहारो॥३॥

मारुतनंदन दुःख निंकदन संकटमोचन नाम तिहारो।
जान सुकंठ को दीन महा तुम राम मिलाय के सोच निवारो॥
शक्ति लगी जब लक्ष्मण के लै औषधि आतुर प्राण उबारो।
सो वह पौरुष याद करो कह मंगलदीन सुशत्रु संहारो॥ ४॥

कहाँ जाऊँ कासे कहौं कौन सुनैं बैन
मेरे राम के दुलारे हनुमान को सुनाइये।
विनती करत मति मंद अति बुद्धि हीन
कृपा करि महावीर बिगरी बनाइये।
कपिनाथ कीस हरि दूत बलवान
एक बेर मेरी ओर नजर चलाइये।
मंगल दीन पै कृपा की कोर राख प्रभु
कीजिये न देर अब कष्ट से छुड़ाइये॥५॥

अतुलितबलधामं हेम शैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥
आंजनेयमतिपाटलाननं कांचनाद्रिकमनीय विग्रहम्।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम्॥
यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं तत्र तत्र कृत मस्तकांजलिम्।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥

एकमुखी हनुमान कवच

श्रीरामचन्द्र जी कृत

ॐ गंग नमः।
शं शं शं सिद्धनाथं प्रणमति चरणं वायुपुत्रं चं रौद्रं।
बं बं बं विश्वरूपं हः हः हः हसितं गर्जितं मेघ छत्रम्।
तं तं तं त्रैलोक्यनाथं तपति दिनकरं तं त्रिनेत्र स्वरूपं।
कं कं कं कंदर्प वश्यं कमल मन हरं शाकिनी कालरुपम् ॥१॥

रं रं रं रामदूतं रण गज दमितं रावणच्छेद दक्षं।
बं बं बं बालरूपं नत गिरि चरणं कंपितं सूर्य बिंबम्।
मं मं मं मंत्र सिद्धिं कपि कुल तिलकं मर्दनं शाकिनी नां।
हुं हुं हुं हुंकार बीजं हनति हनुमतं हन्यते शत्रु सैन्यम् ॥२॥

दं दं दं दीर्घरूपं धर कर शिखरं पातितं मेघनादं।
ॐ ॐ ॐ उच्चाटितं वै सकल भुव तलं योगिनी बृंद रूपं।
क्षं क्षं क्षं क्षिप्र बेगं क्रमति च जलधिं ज्वालितं रक्ष दुर्गम्।
क्षें क्षें क्षें क्षेम तत्वं दनु रूह कुलकं मुच्यते बिम्ब कारम्॥३॥

कं कं कं काल दुष्टं जल निधि तरणं राक्षसानां विनाशे।
दक्षं श्रेष्ठं कवीनां त्रिभुवन चरतां प्राणिनां प्राणरूपं।
ह्रां ह्रां ह्रां सत्तत्वं त्रिभुवन रचितं दैवतं सर्व भूते।
देवानां च त्रयाणां फणि भुवन धरं व्यापकं वायुरूपं॥४॥

त्वं त्वं त्वं वेद तत्वं बहु ऋग्यजुषां सामचाथर्वरूपं।
कं कं कं कंदने त्वं ननुकमल तले राक्षसान् रौद्र रूपान् ॥
खं खं खं खंग हस्ते झटिति भुव तले त्रोटितं नागपाशं।
ॐ ॐ ॐ ॐकार रूपं त्रिभुवन पठितं वेदमंत्राधिमंत्रम्॥५॥

संग्रामे शत्रुमध्ये जलनिधि तरणे व्याघ्रसिंहे च सर्पे।
राज द्वारे च मार्गे गिरि गुह विवरे चोषरे कंदरे वा॥
भूत प्रेतादि युक्ते ग्रह गण विषये शाकिनी डाकिनी नां।
देशे विस्फोटका नां ज्वर वमन शिरः पीड़ने नाशकस्त्वम्॥६॥

॥ राम राम :: इति :: राम राम॥

अथ एक मुखी हनुमत्कवचम्

एकदा सुखमासीनं शंकरं लोक शंकरम्।
पप्रच्छ गिरिजाकान्तम् कर्पूर धवलम् शिवम्॥१॥

पार्वत्युवाच-

भगवन्देव देवेश लोकनाथ जगद्गुरो।
शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद् ध्रुवम्॥२॥

संग्रामे संकटे घोरे भूत प्रेतादिके भये दुःखदावाग्नि।
सन्तप्त चेतसां दुःख भागिनाम्॥३॥ ईश्वर उवाच॥३॥

शृणु देवी प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ॥४॥
विभीषणाय रामेण प्रेम्णादत्ते च यत्पुरा।
कवचं कपिनाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः।
गुह्यं ते संप्रवक्ष्यामि विशेषाच्छृणु सुन्दरि ॥५॥

विनियोग- ॐ अस्य श्री हनुमत्कवचस्तोत्र मंत्रस्य श्री रामचन्द्र ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः। श्री महावीरो हनुमानदेवता। मारुतात्मज इति बीजम्। ॐ अंजनी सूनूरिति शक्तिः। ॐ हैं ह्रीं ह्रौं इति कवचम्। ॐ स्वाहा इति कीलकम्, लक्ष्मण प्राणदाता इति बीजम्, मम सकलकार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यास- ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ अंजनी सूनवे हृदयाय नमः। ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा। ॐ वायु सुतात्मने शिखायै वषट्। ॐ वज्रदेहाय कवचाय हुम्। ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारणाय अस्त्राय फट्। ॐ रामदूताय विद्महे कपिराजाय धीमहि तन्नो हनुमान् प्रचोदयात्। ॐ हुँ फट् । इति दिग्बन्धः। ॐ ध्यायेद् बाल दिवाकर द्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्र प्रमुख-प्रशस्त यशसं देदीप्यमानंरूचा। सुग्रीवादि समस्त वानरयुतं सुव्यक्ततत्त्व प्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ॥१॥ उद्यन्मार्तण्डकोटि-प्रकटरुचियुतं चारूवीरासनस्थं मौञ्जी यज्ञो पवीताऽऽभरण

रुचिशिखाशोभितं कुण्डलाढ्यम्। भक्ताना-मिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनाद प्रमोदं ध्यायेद् देवं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीं भूतवार्धिम्॥२॥ बज्रांङ्ग पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डल-मण्डितम्। नियुद्धकर्म कुशलं पारावार-पराक्रमम्॥३॥ वामहस्ते महावृक्षं दशास्य करखण्डनम्। उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत्॥४॥ स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृतांजलिम्। कुण्डल-द्वयसंशोभिमुखाम्भोजं हरिं भजेत्॥५॥ उद्यदादित्य संकाशमुदारभुज विक्रमम्। कन्दर्प कोटि लावण्यं सर्व विद्या विशारदम्॥६॥ श्री रामहृदयानन्दं भक्तकल्प महीरूहम्। अभयं वरदं दोर्भ्यां कलये मारुतात्मजम्॥७॥ अपराजित नमस्तेऽस्तु नमस्ते रामपूजित। प्रस्थानं च करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा॥८॥ यो वारां निधिमल्पपल्वलमिवोल्लङ्घ्य प्रतापान्वितो। वैदेही-घनशोक-तापहरणो वैकुण्ठ तत्त्वप्रियः। अक्षाद्यूर्जित राक्षसेश्वर-महादर्पापहारीरणे सोऽयं वानर पुंगवोऽवतु सदा युष्मान्समीरात्मजः॥९॥ वज्राङ्गं पिङ्गकेशं कनकमयल-सत्कुण्डलाक्रांतगण्डं नाना विद्याधिनाथं करतल विधृतं पूर्णकुम्भं दृढं च। भक्ताभीष्टाधिकारं विदधति च सदा सर्वदा सुप्रसन्नं त्रैलोक्य त्राणकारं सकलभुवनगं रामदूतं नमामि॥१०॥ उद्यल्लांगूलकेशं प्रलय जलधरं भीममूर्तिं कपीन्द्रं वन्दे रामांघ्रिपद्म भ्रमरपरिवृतं त त्त्वसारं प्रसन्नम्। वज्राङ्गं वज्ररूपं कनकमयलसत्कुण्डला क्रान्तगण्डं दम्भोलि-स्तम्भसारप्रहरणविकटं भूतरक्षोधिनाथम्॥११॥ वामे करे

वैरिभयं वहन्तं शैलं च दक्षे निज कण्ठलग्नम् ॥ दधानमासाद्य सुवर्ण वर्णं भजे ज्वलत्कुण्डल रामदूतम् ॥ १२ ॥ पद्मरागमणि कुण्डलत्विषा पाटलीकृत कपोल मण्डलम्। दिव्यदेवकदलीवनान्तरे भावयामि पवमाननन्दनम् ॥ १३ ॥

ईश्वर उवाचः- इति वदति विशेषाद्राघवो राक्षसेन्द्रं प्रमुदितवरचित्तो रावणस्यानुजो हि। रघुवरवरदूतं पूजयामास भूयः स्तुतिभिरति कृतार्थं स्वं परं मन्यमानः ॥ १४ ॥ वन्दे विद्युद्वलयसुभगं स्वर्ण यज्ञोपवीतं कर्ण द्वन्द्वे कनकरुचिरे कुण्डलं धारयन्तम्। उच्चैर्हृष्यद् द्युमणि किरणैः श्रोणि सम्भाविताङ्गं। सत्कौपीनं कपि वरवृतं कामरूपं कपीन्द्रम् ॥ १५ ॥ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं सततं स्मरामि ॥ १६ ॥ ॐ नमो भगवते हृदयाय नमः। ॐ आंजनेयाय शिरसे स्वाहा। ॐ रुद्रमूर्तये शिखायै वषट्। ॐ रामदूताय कवचाय हुम्। ॐ हनुमते नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अग्निगर्भाय अस्त्राय फट्। ॐ नमो भगवते अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वायु सूनवे तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रुद्रमूर्तये मध्यमाभ्यां नमः। ॐ वायु सूनवे अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हनुमते कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अग्निगर्भाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। अथ मंत्र उच्यते। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः। ॐ ह्रीं ह्रौं ॐ नमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी, यक्षिणी, पूतना, मारी, महामारी, यक्ष, राक्षस, भैरव, बेताल, ग्रह, राक्षसादिकं क्षणेनहन, हन भंजय, भंजय, मारय, मारय, शिक्षय, शिक्षय,

महामाहेश्वररुद्रावतार हुँ फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्ट जनमुखस्तम्भनं कुरु कुरु ह्रां ह्रीं ह्रूं ठं ठं ठं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते अंजनीगर्भ सम्भूताय रामलक्ष्मणानन्दकराय कपिसैन्य प्रकाशनाय पर्वतोत्पाटनाय सुग्रीव-साधकाय रणोच्चाटनाय कुमार ब्रह्मचारिणे गम्भीर शब्दोदयाय ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ सर्वदुष्ट निवारणाय स्वाहा। ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान् भूतभविष्य-द्वर्तमानान् दूरस्थान् समीपस्थान् सर्वकाल, दुष्ट दुर्बुद्धी-नुच्चाटयोच्चाटय परबलानि क्षोभय, क्षोभय मम सर्वकार्यं, साधय, साधय, हनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् देहि ॐ शिवं सिद्धिं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ॐ स्वाहा। ॐ नमो हनुमते परकृतयंत्रमंत्र पराहंकार, भूत प्रेत, पिशाच, परदृष्टि सर्वविघ्नदुर्जन-चेटकविद्या सर्वग्रहान्निवारय, निवारय, वध, वध, पच, पच, दल, दल, किल, किल सर्वकुयंत्राणि दुष्टवाचं फट् स्वाहा। ॐ नमो हनुमते पाहि, पाहि, एहि-एहि सर्वग्रहभूतानां शाकिनी, डाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्व विषयानाकर्षय आकर्षय, मर्दय, मर्दय, भेदय, भेदय, मृत्यु मुत्पाटयोत्पाटय शोषय, शोषय, ज्वल, ज्वल, प्रज्वल, प्रज्वल भूत मण्डलं प्रेतमण्डलं पिशाचमण्डलं निरासय, निरासय, भूतज्वर, प्रेतज्वर चातुर्थिकज्वर, विषमज्वर, माहेश्वरज्वरान् छिन्धि, छिन्धि, भिन्धि, भिन्धि, अक्षिशूल, वक्षःशूल, शिरोभ्यन्तरशूल, गुल्मशूल, पित्तशूल, ब्रह्मराक्षस कुल, परकुल नागकुल विषं नाशय-नाशय निर्विषं कुरु, कुरु फट् स्वाहा। ॐ ह्रीं

सर्वदुष्टग्रहान्निवारय स्वाहा। ॐ नमो हनुमते पवन-पुत्राय वैश्वानरमुखाय हन, हन पापदृष्टिं षण्डदृष्टिं हन, हन हनुमदाज्ञया स्फुर, स्फुर स्वाहा।

श्री रामचन्द्रोवाच-

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः। प्रतीच्यां पातु रक्षोघ्नः उत्तरस्यामार पारगः ॥१॥ उदीच्या दूर्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः अधश्च विष्णु भक्तस्तु पातु मध्यं च पावनिः ॥२॥ अवान्तरदिशः पातु सीता शोक विनाशनः। लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम् ॥३॥ सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः। भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् ॥ ४॥ नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः। कपोलौ कर्णमूले तु पातु श्रीरामकिंकरः ॥ ५॥ नासाग्रमंजनी सूनुर्वक्त्रं पातु हरीश्वरः। वाचं रुद्रप्रियः पातु जिह्वां पिङ्गललोचनः ॥६॥ पातु दन्तान् फाल्गुनेष्टश्चिबुकं दैत्य प्राणहृत्। पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः ॥ ७॥ भुजौपातु महातेजाः करौ तु चरणायुधः। नखान्नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः ॥८॥ वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः। लंकाविभंजनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम् ॥९॥ नाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः। गुह्यं पातु महाप्राज्ञः सक्थिनी च शिवप्रियः ॥१०॥ ऊरू च जानुनी पातु लंकाप्रासाद भंजनः। जंघे पातु महाबाहुर्गुल्फौ पातु महाबलः ॥११॥ अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः। पादान्ते सर्वसत्त्वाढ्यः पातु पादांगुलीस्तथा ॥१२॥ सर्वाङ्गानि

महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान्। हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्वि - द्वान्विचक्षणः ॥१३॥ स एव पुरुषः श्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति। त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं सदा ॥१४॥ सर्वान् रिपून्क्षणे जित्वा स पुमाञ्छ्रियमाप्नुयात्। मध्य रात्रे जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद्यदि ॥१५॥ क्षयाऽपस्मार, कुष्ठादि तापत्रय, निवारणम्। अर्कवारेऽश्वत्थमूले स्थित्वा पठति यः पुमान्॥ १६॥ अचलांश्रियमाप्नोति संग्रामे विजयी भवेत्॥ १७॥ यः करे धारयेन्नित्यं स पुमान् श्रियमाप्नुयात्। विवाहे दिव्यकाले च द्यूते राजकुले रणे ॥१८॥ भूतप्रेतमहादुर्गे रणे सागरसम्प्लवे। दशवारं पठेद् रात्रौ मिताहारी जितेन्द्रियः॥ १९॥ विजयं लभते लोके मानवेषु नराधिपः। सिंहव्याघ्रभये चोग्रे शरशस्त्रास्त्रपातने ॥२०॥ शृङ्खलाबन्धने चैव काराग्रहणकारणे। कायस्थं बह्निदाहे च गात्ररोगे च दारुणे ॥२१ ॥ शोके महारणे चैव ब्रह्मग्रहविनाशने। सर्वदा तु पठेन्नित्यं जयमाप्नोत्य संशयम् ॥२२॥ भुर्जे वा वसने रक्ते क्षौमे वा तालपत्रके। त्रिगन्धेनाथवा मस्या लिखित्वा धारयेन्नरः ॥२३॥ पंचसप्त त्रिलोहैर्वा गोपितं कवचं शुभम्। गले कट्यां वाहुमूले कण्ठे शिरसि धारितम् ॥२४॥ सर्वान्कामान वाप्नोति सत्यं श्रीरामभाषितम् ॥२५॥ उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः। आदाय तेनैव ददाह लंकाम् नमामि तं प्रांजलि- रांजनेयम् ॥२६॥ ॐ हनूमान अञ्जनी सुनुर्वायुपुत्रो महाबलः। रामेष्टः फाल्गुन सखः पिङ्गाक्षोऽमित विक्रमः ॥२७॥

उदधि क्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः। लक्ष्मण प्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥२८॥ द्वादशैतानि नमानि कपीन्द्रस्य महात्मनः। स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत् ॥२९॥ तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत्। धन धान्यं भवेत् तस्य दुःखं नैव कदाचन ॥३०॥

पंचमुखी हनुमत्कवचम्

विनियोगः-ॐ अस्य श्री पंचमुखि हनुमत्कवचस्तोत्रमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः श्रीहनुमान्देवता। रां बीजम्। मं शक्तिः। चन्द्र इतिकीलकम्। ॐ रौं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं अस्त्राय फट्।

ईश्वर उवाच-

अथ ध्यानम्

प्रवक्ष्यामि शृणु सर्वाङ्गसुन्दरम्।
यत्कृतं देवदेवेशि ध्यानं हनुमतः प्रियम् ॥१॥
पंचवक्त्रं महाभीमं कपियूथ समन्वितम्।
बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्व कामार्थ सिद्धिदम् ॥२॥
पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटि सूर्य-समप्रभम्।
दंष्ट्राकरालवदनं भृकुटी कुटीलेक्षणम् ॥३॥
अस्यैव दक्षिणं वक्त्रंनारसिंहं महाद्भुतम्।
अत्युग्रतेजो वपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥४॥
पश्चिमे गारूणं वक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम्।
सर्वनागप्रशमनं सर्व भूतादि कृन्तनम् ॥५॥
उत्तरं सौकरं वक्त्रं कृष्ण दीप्तनभोमयम्।
पाताले सिद्धवेतालं ज्वररोगादि कृन्तनम् ॥६॥
उर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्त करं परम्।
येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र तारकाया महाहवे ॥७॥

दुर्गते शरणं तस्य सर्वशत्रुहरं परम्।
ध्यात्वा पंचमुखं रुद्रं हनुमंतं दयानिधिम्॥८॥
खड्गं त्रिशूलं खटवांगं पाशमंकुशपर्वतम्।
मुष्टौ तु मोदकौ वृक्षं धारयन्तम् कमण्डलुम्॥९॥
भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दमनं मुनिपुङ्गवम्।
एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भयापहम्॥१०॥
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्।
सर्वैश्वर्यमयं देवं हनुमद्विश्वतोमुखम्॥११॥
पञ्चास्यमच्युत मनेक विचित्र वर्णवक्त्रं संशखनिभृतं।
कपिराजवीर्यम्। पीताम्बरादि मुकुटैरपि शोभिताङ्ग
पिङ्गाक्षमंजनिसुतं ह्यनिशं स्मरामि॥१२॥
मर्कटस्य महोत्साहं सर्वशोक विनाशनम्।
शत्रुसंहारकं चैतत्कवचं ह्यापदं हरेत्॥१३॥
ॐ हरि मर्कटाय स्वाहा॥१४॥
ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पूर्व कपिमुखाय।
सकल शत्रु संहारणाय स्वाहा॥१५॥
ॐ नमो भगवते पंचवदनाय दक्षिणमुखाय
कराल वदनाय नरसिंहाय सकल भूत प्रमथनाय स्वाहा।
ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पश्चिममुखाय।
गरुडाननाय सकल विषहराय स्वाहा।
ॐ नमो भगवते पंचवदनाय उत्तरमुखाय।
आदिवाराहाय सकल सम्पत्कराय स्वाहा॥१६॥
ॐ नमो भगवते पंचवदनाय ऊर्ध्वमुखाय।
हयग्रीवाय सकल जनवशङ्कराय स्वाहा॥१७॥

॥ इति मूल मंत्रः॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री पंचमुखि हनुमत्कवच स्तोत्र मंत्रस्य श्री रामचन्द्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः। श्री रामचन्द्रो देवता। सीता बीजम्। हनुमानिति शक्तिः। हनुमत्प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। पुनर्हनुमानिति बीजम्। ॐ वायुपुत्राय इति शक्तिः। अंजनीसुतायेति कीलकम्। श्री रामचन्द्रवर प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यासः - ॐ हं हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वं वायुपुत्राय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ अंजनीसुताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रां रामदूताय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ रुं रुद्रमूर्तये कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ सं सीता शोक निवारणाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः- ॐ अंजनीसुताय हृदयाय नमः। ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा। ॐ वायु पुत्राय शिखायै वषट्। ॐ अग्निगर्भाय कवचाय हुम्। ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ पंचमुखि हनुमते अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

विनियोगः-श्रीरामदूताय, आंजनेयाय, वायुपुत्राय, महाबलाय सीताशोकनिवारणाय, महाबलप्रचण्डाय, लंकापुरीदहनाय, फाल्गुनसखाय, कोलाहल सकल ब्रह्माण्ड विश्वरूपाय, सप्त समुद्र निरन्तरलंघिताय, पिङ्गलनयनायाऽमितविक्रमाय, सूर्यबिम्बफलसेवाधिष्ठितनिराक्रमाय, संजीवन्या, अंगद-लक्ष्मण- महाकपिसैन्य प्राणदात्रे दशग्रीव विध्वंसनाय, रामेष्टाय सीताया सह रामचन्द्र वर प्रसादाय षट्प्रयोगागम पंचमुखि हनुमन्मन्त्र जपे विनियोगः।

दिग्बन्धः-

ॐ हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा।

ॐ हरि मर्कट मर्कटाय वं वं वं वं वं फट् स्वाहा।

ॐ हरि मर्कटमर्कटाय फं फं फं फं फं फट् स्वाहा।

ॐ हरि मर्कटमर्कटाय खं खं खं खं खं मारणाय स्वाहा।

ॐ हरि मर्कट मर्कटाय ठं ठं ठं ठं ठं स्तम्भनाय स्वाहा।

ॐ हरि मर्कटाय डं डं डं डं डं आकर्षणाय सकल सम्पत्कराय पंचमुखवीर हनुमते स्वाहा।

ॐ उच्चाटने ढं ढं ढं ढं ढं कूर्ममूर्तये पंचमुख हनुमते पर यन्त्र परतन्त्रोच्चाटनाय स्वाहा।

ॐ कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं स्वाहा। इति दिग्बन्धः।

ॐ पूर्वकपिमुखे पंचमुख हनुमते ठं ठं ठं ठं ठं सकलशत्रु संहारणाय स्वाहा। ॐ दक्षिणमुखे पंचमुख हनुमतेकरालवदनाय नरसिंहाय ह्रां ह्रां ह्रां ह्रां ह्रां सकल भूत-प्रेत दमनाय स्वाहा।

ॐ पश्चिममुखे गरुडासनाय पंचमुखवीर हनुमते मं मं मं मं मं सकल विषहराय स्वाहा।

ॐ उत्तरमुखे आदि वराहाय लं लं लं लं लं नरसिंहाय नीलकंठाय पंचमुख हनुमते स्वाहा। अंजनीसुताय वायुपुत्राय महाबलाय रामेष्ट फाल्गुनसखाय सीताशोकनिवारणाय लक्ष्मण प्राण रक्षकाय कपि सैन्य प्रकाशाय सुग्रीवाभिमानदहनाय श्रीरामचन्द्रवर-प्रसादकाय महावीर्याय प्रथमब्रह्माण्डनायकाय पंचमुखहनुमते भूत प्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, शाकिनी, डाकिनी, अन्तरिक्ष ग्रह, परमंत्र, परयंत्र, परतंत्र, सर्व ग्रहोच्चाटनाय सकल

शत्रुसंहारणाय पंचमुख हनुमद्वर प्रसादक सर्वरक्षकाय जं जं जं जं जं स्वाहा।

इदं कवचं पठित्वा तु महाकवचं पठेन्नरः। एकवारं पठेन्नित्यं सर्वशत्रु निवारणम्॥ १८॥ द्विवारं तु पठेन्नित्यं पुत्र, पौत्र प्रवर्धनम्। त्रिवारं पठेन्नित्यं सर्वसम्पत्करं परम्॥ १९॥ चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशीकरम्। पंचवारं पठेन्नित्यं सर्वरोग निवारणम्॥२०॥ षड्वारं तु पठेन्नित्यं सर्वदेव वशीकरम्। सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्व कामार्थ सिद्धिदम्॥२१॥ अष्टवारं पठेन्नित्यं सर्व सौभाग्यदायकम्। नववारं पठेन्नित्यं सर्वैश्वर्य प्रदायकम् ॥२२॥ दशवारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्य ज्ञानदर्शनम्। एकादशं पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिं लभेन्नरः। कवचस्मृति मात्रेण महालक्ष्मी फलप्रदम् ॥२३॥ इति॥

अथ हनुमान दुर्ग प्रारम्भ

श्री गणेशाय नमः॥

ॐ अस्य श्री अनन्त घोर प्रलय ज्वालाग्नि रुद्रस्य बीर हनुमान॥ असाध्य साधन ॥ अघोरास्त्र योम्हलं मंत्रस्य ईश्वर ऋषि अनुष्टुप्छन्दः ॥ श्री राम लक्ष्मणौ देवता नाना बिधानि छन्दांसि सौं बीजं अंजनी सुनुरीति शक्तिः॥ वायूपुत्र इति कीलकं श्री हनुमत प्रसाद सिध्यर्थं स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक, पाताल लोक वश्यार्थं मम ऋद्धि, सिद्धि तत्पद सिध्यर्थं जपे विनियोगः॥

ॐ नमो भगवते दावानल कालाग्नि हनुमते॥ ॐ भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ नमो भगवते श्री प्रताप हनुमते महावीराय॥ ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ नमो भगवते

चण्ड प्रताप हनुमते॥ ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ नमो भगवते चिन्तामणी हनुमते ॥ ॐ महः अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ नमो भगवते पाताल गरुड़ हनुमते॥ ॐ जनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ नमो भगवते प्रलय मारुत हनुमते॥ ॐ तपः सत्यं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः॥ ॐ नमो भगवते दावानल कालाग्नि हनुमते॥ ॐ भूः हृदयाय नमः॥ ॐ नमो भगवते श्री प्रताप हनुमते महावीराय। ॐ भुवः शिरसे स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते चण्ड प्रताप हनुमते॥ ॐ स्वः शिखायै वषट्॥ ॐ नमो भगवते चिन्तामणी हनुमते ॥ ॐ महः कवचाय हुं॥ ॐ नमो भगवते पाताल गरुड़ हनुमते॥ ॐ जनः नेत्राभ्यांवषट्॥ ॐ नमो भगवते प्रलय मारुत हनुमते॥ ॐ तपः सत्यं अस्त्राय फट् ॥ इति हृदयादि न्यासः॥

ॐ नमो भगवते दावानल कालाग्नि हनुमते॥ तेजो वितान धवली कृत बज्र देह बज्र काय बज्र तुण्ड बज्र नख बज्र मुख बज्र बाहु बज्र रोम बज्र नेत्र बज्र दन्त बज्र करकमल मात्म कराय विकटाय भीम कर पिंगलाक्ष॥ उग्र प्रलय कालाग्नि रुद्रवीर भद्रावतार सर्भ शाल्व भैरव दुरादण्ड॥ लंकापुरी दहनं॥ ॐ उदधि लंघनं। कृतात सत्य विश्वास ईश्वर पुत्र वायु सुत अंजनी गर्भ सम्भूत उदय भास्कर विंव नर दैव दानव ऋषि मुनि बंधवति सायुधर पशुपतास्त्र, ब्रह्मास्त्र, वैष्णवास्त्र, नारायणास्त्र, काल शक्ति, काल दण्ड, कालपास, अघोरास्त्र निवारणाय, ब्रह्मास्त्र निवारणाय, नारायणास्त्र निवारणाय. वैष्णवास्त्र निवारणाय, नारायण

मृडाय, सर्वशक्ति ममात्मकराज, पर विद्या निवारणाय॥ अग्न्यादित्या याथर्वण वेद अस्थिर कराय निराहार वायुबेग मनोवेग श्री राम तारक परब्रह्म विश्वरूप निरंजन लक्ष्मण प्राण प्रतिष्ठानन्द कर स्थल जलाग्नि गर्भ मम मनोभेदि भेदि सर्व शत्रु छेदि छेदि मम सर्वत्र रक्ष रक्ष, मम बैरी खादय खादय, संजीवन पर्बतोत्पाटनाय पर्बतोत्पाटनाय, डाकिनी शाकिनी विध्वंसनाय विध्वंसनाय॥ सुग्रीव संधि करण निष्कलंकित कुमार ब्रह्मचारी दिगम्बर दुष्ट सर्व पाप ग्रह कुमार ग्रह सर्वं छेदय छेदय भेदय भेदय भिन्दि भिन्दि खादय खादय कंटकान् ताड़य ताड़य मारय मारय शोषय शोषय ज्वालय ज्वालय हर हर दैत्यं दानवान नाशय नाशय अतिशोषय शोषय मम सर्वत्र रक्ष रक्ष॥ ॐ नमो भगवते श्री प्रताप हनुमते महावीराय। सर्व दुःख विनाशनाय विनाशनाय॥ ग्रह मंडल, भूत मंडल, प्रेत मंडल, पिशाच मंडल, उच्चाटनाय उच्चाटनाय उच्चाटनाय॥ अन्तर भवार्दिक ज्वर, महेश्वर ज्वर, विष्णु ज्वर, शीत ज्वर, विषम ज्वर, वात ज्वर, पित्त ज्वर, एकाह्निकं, द्वाह्निकं, त्रिटोकं, चातुर्थिकं, पंचमासिकं, षाणमासिकं, सवत्सरादिकं, वायुपित्तं, श्लेष्मं, सन्निपातिकं, अन्तरगती, अपस्मारिकं, भ्रमं छेदय छेदय, भेदय भेदय, भिन्दि भिन्दि, छिन्दि छिन्दि॥ ॐ नमो भगवते चिन्तामणी हनुमते॥ अंग शूल, अस्थि शूल, अक्षि शूल, गुदा शूल, कीट शूल, जानु शूल, जंघा शूल, पित्त शूल, वायु शूल, स्तन शूल, सर्व शूल, निर्मलाय दावन, दैत्य, कामरणी बेताल,

ब्रह्मराक्षस, कोलाहल, नागपाश, अनन्त बासुकी तक्षक, कोटिक कालीय पद्मक कुमुदजं जल स्थल नागपाश महानागान, कालपाशांश्च, विषं, निर्विषं कुरु कुरु स्वाहा॥ ॐ पाताल गरुड़ हनुमते भैरवान भैरवान मद गज इन्द्रादि पाश बंधय बंधय छेदय छेदय॥ ॐ प्रलय मारुत कालाग्नि हनुमते। श्रृंखला बंधनं विमुंचय विमुंचय सर्व प्रवल ग्रहान छेदय छेदय सर्व कारज साधय साधय ममबल प्रसन्न, श्रीराम रक्षा नृसिंह भैरव स्वरूप॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रैं ह्रौं ह्रं क्षौं स्त्रौं भ्रौं घ्रौं श्रीं ह्रीं क्लीं क्लां क्लीं भ्रां क्रां क्रीं हीं हीं हुं हैं हौं हं। खें खें खें जय जय मारण मोहन वशीकरण घृणी घृणी दमय दमय मारय मारय बानराय नमः खें खें खें हुं फट् स्वाहा॥ भ्रमय भ्रमय चल चल कुरु कुरु फट् स्वाहा॥ जय जय हुंस हुंस मंद मंद दुष्ट दुष्ट ग्रह ज्वालय ज्वालय मृडाय मृडाय त्रासय त्रासय सहस्त्र कमलाय यज्ञालशत ममलां यक्षो लंत्र अस्त्रो त्रिशूल डमरू व्याल मृत्युकपाख। अष्टांग धारय धारय वायु बंधय बंधय सर्व ग्रह बंधय बंधय सर्व वीर बंधय बंधय साश्रिताय आवर्तीय आद्यांतर भ्रंषय भ्रंषय पर मंत्र पर यंत्र पर तंत्र शत सहस्त्र कोटि रिपुन भेदय भेदय अग्नि बंधय बंधय फट् स्वाहा॥ अनन्तोग्नि दुष्ट नागानां, द्वादश तक्षक कुल बृश्चिकानां एकादशकुल भूतानां, हन हन बज्र तुण्ड उग्र उच्चाटनाय उच्चाटनाय फट् स्वाहा॥ मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, जृम्भन, आकर्षण, उच्चाटन, स्मिलन, विध्वंसन, युद्ध तरक मर्क बंध बंध

स्वाहा॥ कुमार पाद त्रिहार वाणोग्र मूर्तिय मूर्तिय ग्राम बासिनेति पूर्ब सक्ताय सक्ताय सर्वायुधानि स्वाहा॥ ॐ अस्य क्ष्याय धार्यं अं अं अं लं लं लं ध्रां ध्रों नीं स्वाहा॥ ॐ हुं हुं हुं ठं ठं ठं लं लं लं देव दत्त दिगम्बर अष्ट महाभैरव अष्टांग धराय नव नाटक भैरवाय वानर भालु नख दंष्ट्राधराय, अष्ट महाशक्ति अष्टांग धराय नवब्रह्मब्रह्माय, दश विष्णुरूप धराय, एकादश रुद्रावताराय, द्वादशार्क तेजाय, त्रयोदश सोम मुखाय, भीम मुखाय बीर हनुमते॥ स्तम्भनी, जृम्भनी, मोहनी, वशीकरनी, त्रिबाचा सत्याय नमः॥ राजमुख बंधनाय नमः, बालमुख बंधनाय नमः, मकर मुख बंधनाय नमः खल मुख जिह्वा व्याघ्र सर्प सर्व बृश्चिक अग्नि ज्वाला विष निरगंडनं सर्ब जन बैरी मुख बंधनाय, व्याघ्र मुख बंधनाय वीर हनुमते॥ ईश्वरावतार वायु नन्दन अंजनी सुत बंधु बंधु सत्य बंधु॥ श्री रामचन्द्रोवाच॥ श्री महादेवोवाच ॥ श्री बीरभद्रोवाच॥ त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः॥ ॐ ह्रां ह्रीं हुं अस्य ह्रीं ह्रीं ध्रीं त्रीं यां भ्रें भ्रें भ्रें श्रीं हट् हट् खट् खट् सर्व खट् विश्व खट शस्त्र वश्य खट् शत्रु वश्य खट् सर्व जानासि द्रश्व खट् लं लां श्रीं ल्हां ल्हीं ल्हौं नमः। स्तम्भय जृम्भय जृम्भय आर्द्रा आर्दीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं में सर्व ह्रीं ह्रीं सागरीं ह्रीं ह्रीं सर्व वश्य सर्व मंत्रार्थ सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा॥

॥ इति श्री अथर्वण वेद मंत्र देवी प्रोक्तं श्री हनुमान दुर्ग समाप्तम्॥

सर्व कल्याणप्रद श्री हनुमदष्टक

सं सं सं सिद्धिनाथं प्रणत भय हरं वायु पुत्रं बलिष्ठम् ।
वंदेऽहं दिब्य रूपं बिकसित वदनं गर्जमानं कपीन्द्रम् ॥
तं तं तं लोक नाथं तपन मुख धरं श्री त्रिनेत्रं स्वरूपम् ।
रं रं रं राम दूतं रण मुख रमणं रावणाच्छेद नाथम् ॥ १ ॥
बं बं बं बालरूपं हृदय गिरि चरं सूर्य बिम्बं ग्रसन्तम् ।
मं मं मं मंत्र नाथं कपि कुल तिलकं मर्दनं शाकिनी नाम् ॥
पं पं पं पद्मनाभं प्रणत पर वरं चाञ्जनायाः सुपुत्रम् ।
हुं हुं हुं कार बीजं ह्यसुर भय हरं नौम्यहं बायुपुत्रम् ॥ २ ॥
डं डं डं डाकिनी नां प्रमद बल हरं योगिनी बृन्द रूपम् ।
क्षं क्षं क्षं क्षिप्र वेगं तरित जल निधिं जानकी दर्शनार्थम् ॥
छं छं छं क्षद्मनान्तं छल भय हरणं मर्दनं वर्णाराणाम् ।
किं किं किं काल दष्ट्रं प्लवंग बल बरं नौम्यंह रामदूतम् ॥ ३ ॥
बृं बृं बृं बृंद्धि रूपं त्रिभुवन रमणं प्राणिनां प्राण रक्षम् ।
ह्रीं ह्रीं ह्रीं शब्द तत्त्वं जग दघ हरणं दैत्य संहार रूपम् ॥
देवानां शान्ति रूपं सकल गुण निधि पापिनां पावनं त्वम् ।
त्वं त्वं त्वं वेद तत्त्वं द्रुहिण गिरि हरं चाञ्जनेय भजेऽहम् ॥ ४ ॥
क्रं क्रं क्रं क्रोश यन्तं समर भुवि महाक्रव्य भक्षी कलानाम् ।
ह्रां ह्रां ह्रां ह्रास यन्तं भगण ग्रह युतं स्वेन रूपेण तं ॥
श्रीं श्रीं श्रीं साधु रूपं पवन वर सुतं वानराणांधीशम् ।
क्लीं क्लीं क्लीं ज्ञान रूपं दुरित शत हरं भावयेऽहं कपीशम् ॥ ५ ॥

वं व वं वर्वराणं क्षय करण परम ज्ञान गम्यं कपीशम्।
अं अं अं आञ्जनेयं गुणिगण नमतं गोपिका सुनु तुष्टम्॥
ना देनां कम्पयन्तं खचर वर बलं लक्ष्मणः प्राणदानम्।
खं खं खं खंग हस्तं दश मुख दमनं नौम्यहं वायुपुत्रम्॥६॥
ॐ ॐ ॐकार रूपं त्रिभुवन पठितं मंत्र तंत्र स्वरूपम्।
तं तं तं कोपि तत्त्वं दिनकर तिलकं प्रीति पात्रं पवित्रम्॥
थं थं थं स्थाणु रूपं प्रमथ गण नुत राक्षासन् भषियन्तम्।
दं दं दं दण्ड यन्तं वृष विमुख नरान नौम्यहं तं कपीशम्॥७॥
धं धं धं धावमानं धरणि धर धरं भूधराकार रूपम्।
एकाचारान ग्रसन्तं रविकुल सुखदं रावणं राव यन्तम्॥
नं नं नं नाम मात्रान्तर कलुष हरं नार संघट्टनादम्।
ना देना पूर यन्त गिरिवर विवरान नौम्यहं तं कपीन्द्रम॥८॥
हं हं हं हाक्व सीते रवि मिति धरणिं जायते संहरन्तम्।
कं कं कं कालरूपं दशमुख तनयस्यांगनां भर्त्सयन्तम्॥
गं गं गं गीयमानं सुर नर मुनि भिवेर्द वेदान्त गम्यम्।
वन्देऽहं कामरूपं भव भय हरणं पावमानं वरेन्यम्॥९॥
संग्रामे शत्रु मध्ये जल निधि विषये व्याघ्र सिंहादि पाते।
राजद्वारे च नीतौ गिरिवर विवरे पत्तेन वा वनेवा॥
भूत प्रेतेषु सर्व ग्रह गण दरिते शाकिनी वीर कष्टे।
यस्त्वे तत्पाव माने पठति यदि नर ध्याष्टकं तं न दुःखम्॥१०॥

(इति श्री हनुमदष्टक समाप्तम्)

श्री हनुमते नमः जंजीरा

ॐ ह्रैं स्फ्रैं ह्रौं ह्रीं हं हं हं हं हं हं हं हनुमन्ता महाबलवंता नख सिख सेन्दूर धारण करन्ता नगर पैठि कै कील करन्ता, जो नर आवै मार मार करन्ता सो नर मेरे पाँव परन्ता, लोहे का कोट बज्र की खाई जहाँ श्री हनुमन्त की परी दोहाई, घाट बाधौं, बाट बाधौं, दृष्टि बाधौं, शृष्टि बाधौं, मुष्टि बाधौं, छल बाधौं, छुद्र बाधौं, भूत बाधौं, प्रेत बाधौं, शाकिनी बाधौं, डाकिनी बाधौं, वीर बाधौं, वैताल बाधौं, राजा बाधौं, प्रजा बाधौं, माइधिया डाइनि बाधौं, बापे पूते ओझा बाधौं, कईल करतूत बाधौं, सर्व रोग पीड़ा बाधौं, सर्व उच्चाटन बाधौं, सर्व घात बाधौं, सर्व कील बाधौं, सर्व दिग दिशा बाधौं, जल वान बाधौं, अग्नि बान बाधौं, तेगा बान बाधौं, फरसा बान बाधौं, पत्थर बान बाधौं, कंकड़ बान बाधौं, बरछी बान बाधौं, ढाल बान बाधौं, तलवार बान बाधौं, हवा बान बाधौं, तैल बान बाधौं, कराही बान बाधौं, सर्व ज्वर बाधौं, सर्व ताप तिल्ली बाधौं, सर्व ताप तिल्ली बाधौं, कच्छवा बाधौं, नजर बाधौं, चलिवाई बाधौं, व्याघ्र मुख बाधौं, सर्प मुख बाधौं, मरी मशान बाधौं, एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर औलिया बाधौं, ऊपर आकाश नीचे धरती बाधौं, सहस्त्र मुख वृक्ष बाधौं, अजर नाम मुक्ता शरीर बाधौं, शस्त्र बाधौं, अस्त्र बाधौ, श्री हनुमान वीर की दोहाई मेरी भक्ती गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥

॥ इति श्री सिद्ध साबर मंत्र हनुमते नमः॥

मंत्र चौकी आसन की

"बजावै हनुमंत डंका, कम्पमान भई लंका, फट कारेउ लंगूर, कनक लंका जरि भई धूर, रावन चलेउ भागि, चहुँ ओर लंका मा लागि आगि, अनन्त दैत्य छिन मँह डारेउ मारि, कीन्हेऊँ राजा राम का कारज सवाँरि दैत्यन का विध्वंस कीन्हेउँ, सन्तन की रक्षा कीन्हेउँ, विभिषन के भये सहाइ, सन्तन का दरस देखाई, यहै जानि जगजीवन धरत ध्यान, हाजिर हनुमंत महावीर बलवान॥"

मंत्रावली

मंत्र टोना झारै का

"सोम शनीचर भौम अगारी, कहाँ चलली देइ अधारी, तोरी जटा बज्र केवार, टोनही बाँधौ सोम दुवार। उत्तर बाधौ कोयला दानव, दक्षिन बाधौं क्षेत्रपाल, चारिउ विद्या बाँधौं कैदेउँ विशेष भँवन दिघिल भँवर, गन चलु गंधर्व चलु छप्पन कोटि दानव चलु, उत्तरा पंथ जोगिनी चलु, पाताले राजा वासुकी चलु, रामचन्द्र के पायक अंजनी के बीर लागे ईश्वर महादेव गौरा पारवती कै दोहाई॥"

विधि- होली, दीपावली, ग्रहण में पहले मंत्र सिद्ध कर लें, फिर वेमरिहा के ऊपर मंत्र पढ़ि-पढ़ि के फूंक मारै तो रोगी अच्छा होगा।

मंत्र कूकुर झारै का

"निरंकार उपजेउ ज्ञान, गुरु उपदेश ते भे परमान कूकुर पाँच कुमति रंग राते मातै विषै बिषंग, जब उन कीन्ह शृष्टि

विस्तार, सतगुरु शब्द से भे संहार, निरंकार शिव पार्वती रक्षा करैं, जग-जीवन दास विसेषि विष निरबिसुकरै॥

विधि- होली, दीपावली, ग्रहण में गुगुल की हवन द्वारा १० हजार जप कर सिद्ध कर लें। पुनः एक हाथ से पानी भरि लावै १०८ बार फूँकि के पियावै।

सौभाग्य मंत्र

(१) ॐ हनुमान वायु देवताय अंजनीसुत राम दूत हनुमान रुद्रमूर्तये स्वाहा। (एक माला नित्य प्रति जप करें) ।

असाध्य रोग शान्त्यर्थ मंत्र

(२) ॐ सं सां सिं सीं सुं सूं से सैं सों सौं सं सः ॐ वं वां विं वीं बुं वूं वें वैं वों वौं वं वः हंसः अमृत वर्चसे स्वाहा।

विधि- १०८ मंत्र से अभिमंत्रित करके शुद्ध जल कटोरे में लेकर नित्य पिलावे। रोगी जीवन निराश को शान्ति मिलेगी। कुशा से जल स्पर्श करता जाय और हर मंत्र के बाद जल में फूंक मारता जाय।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए

(३) ॐ हं पवननन्दनाय रमेराम-रमेराम रमेरामाः ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ स्वाहा।

विधि- पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर श्री हनुमानजी का पूजन करके १२५००० जप अनुष्ठान पूर्वक करें। अनुष्ठान पूर्ण करके पंचमेवा घृत शक्कर से हवन करें। २१ या ११ ब्राह्मण अपनी सामर्थ्य के अनुसार भोजन कराकर यथा शक्ति दक्षिणा देवे।

स्वप्न में अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए

(४) ॐ शिव हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा।

विधि– सायंकाल भोजन के बाद ११ माला नित्य जप करें ४९ दिन तक करें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। एक माला रात्रि में जपकर अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करें।

"ॐ हरि मर्कट मर्कटाय स्वप्नं दर्शय दर्शय ॐ स्वाहा।"

इस मंत्र को २१ लाख जप तथा दशांश हवन कर लेने पर जाग्रत अवस्था में प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। ऐसा ऋषियों का मत है।

मुकदमा में जय पाने के लिए

"अंजनी के नन्द दु:खदण्ड को दूर करो सुमति को टेर पूजूँ तेरे भुजदण्ड प्रचण्ड त्रिलोक में रखियो लाज मर्याद मेरी श्री रामचन्द्र वीर हनुमान शरण में तेरी॥"

विधि– इस मंत्र को गऊ का घृत, पंचमेवा, हवन के साथ २५ हजार जप करने से मुकदमा में विजय प्राप्त होती है।

शक्ति प्राप्ति के लिए

"ॐ नमो भगवते सप्तबदनाय आद्यकपि मुखाय वीर हनुमते सर्व शत्रु संहारणाय ठंठंठंठंठंठंठं ॐ नमः स्वाहा।"

विधि– इस मन्त्र को हवन के साथ ४१ हजार जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

भूत प्रेतादि निवारण के लिए

"ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय पंचवदनाय दक्षिण मुखे करालवदनाय नारसिंहाय सकल भूत प्रेत दमनाय रामदूताय स्वाहा।"

विधि– इस मंत्र को १०००० जप करने से सिद्ध हो जाता है। किन्तु चन्द्र या सूर्य ग्रहण में १०८ जप एवं हवन से ही मंत्र सिद्धहो जाता है।

नोट– रोगी को मंत्र पढ़ते हुए मोर पंख से झाड़े तथा जल अभिमंत्रित करके पिलावैं तो प्रेतादि बाधा शान्त हो जाती है।

आकर्षण के लिए

"ॐ हरि मर्कट मर्कटाय लुं लुं लुं लुं लुं आकर्षितं सकल सम्पतकराय हरि मर्कट मर्कटाय ॐ।"

विधि– पहले सवालाख मंत्र जपकर सिद्ध कर लें पुनः साध्य के चित्र को सामने रख कर आकर्षण करें तो प्राणी सात दिन के अन्दर चला आता है।

भय निवारण के लिए

"अंजनी गर्भ सम्भूताय कपीन्द्र सचिवोत्तम रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमत् रक्ष रक्ष सर्वदा।"

विधि– रात्रि में ११ बार इस मंत्र को पढ़कर तीन ताली बजाकर शयन करें तो चोर भय, सर्प भय, दुःस्वप्न आदि नहीं होंगे।

बन्दि मोक्ष के लिए

"ॐ हरि मर्कट मर्कटाय बंध मोक्षं हरि मर्कट मर्कटाय ॐ" इस मंत्र का सवालाख जप करने से प्राणी कैद से मुक्त हो जाता है।

दुकान खोलने के लिए

"जल खोलूं जल हल खोलूं खोलूं बन्द व्यापार आवै धन अपार फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा हनुमत वचन युग-युग साँचा।"

विधि- प्रथम हवन पूर्वक २५ हजार मंत्र जप कर सिद्ध कर फिर उर्द पर १०८ बार मंत्र पढ़कर दुकान में डाल देने से रुका हुआ व्यापार चलने लगेगा।

आधा शीशी दर्द के लिए

"बन जाई बाद्री जो आधा फल खाय। खड़े हनुमान हाँक दे आधा शीशी जाय।"

विधि- लौंग, गगुल, पंचमेवा, धूप आदि द्रव्यों से १०८ बार सात शनिवार को हवन करें तो मंत्र सिद्ध हो जाता है। पश्चात् जिसके सिर में दर्द होता हो उसे बिठाकर पीली मिट्टी पर मंत्र को ११ बार पढ़कर फूंक मारे और उस मिट्टीको रोगी के माथे पर लगा दें तो दर्द तत्काल बन्द हो जाता है।

मंत्र अन्नपूर्णा भवानी का

"ॐ कुरु-कुरु कैलाश परवत की रानी, भूखे भोजन प्यासे पानी फूरो माता अन्नपूर्णा भवानी।"

विधि- जिस जगह अन्न व द्रव्य धरें, गुगुल धूप देकर धरें, धूप देकर निकाले तो कमी न हो।

मंत्र विच्छू का

"बीछी बीछी तै करते बीछी चलि आउ, छा कारी छा पियरी छा कुकुर की रोरी छा दूध की बहोरी, जौधक बीछी गई राजा रामचन्द्र की बारी तोधक गौरा पारवती उतारी, उतरि बीछी डंकहि आउ डंकहु ते जात रहु, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाच।"

मंत्र बालक के लिए

वज्र केरि मड़ैया वज्रकेरि केंवार, पाँचौ बज्र माँझ दुवार, जो बज्र कहँ घालै घाउ, उलटि वीर मंत्र वाही को खाउ, तामे के कोट लोहे की किंवारी महमंद शाह रहत रखवारी, हे गोरखनाथ तेरी शक्ति तेरे मंत्र की शक्ति उलटंत विद्या पलटंत काया, झपटि वीर नरसिंह आया रोम-रोम में गोद-गोद में बालक की रक्षा करियो, गोरखनाथ मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फूरो मंत्र ईश्वरोवाच।

अधिक रोने वाले बालक के लिए

इतवार (रविवार) के दिन ऊटकटीला (भड़भड़ा) की जड़ लेकर बालक के हाथ में बाँधे तो रोवनी बन्द होय।

मंत्र बर्रें काटे का

"अर्रें बर्रें तुइ बर्रानी। तोरे काटे अन्न न पानी॥
जले मैं गई सीता की फुलवारी। तले तुई झारि उतारी॥
दोहाई लोना चमारी की छू।

सात बार पढ़ के हर दफे फूंक मार दें जहाँ डंक मारा हो।"

विधि- असाढ़ी, फगुई (आग जल जाने के बाद), दीवाली में जब दिया जल जाय। सात बार पढ़कर हर दफे धूप दे दें तो मंत्र सिद्ध हो जाता है, तो तत्काल विष उतर जाता है।

दुःस्वप्न नाश के लिए मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं हं हनुमते रामदूताय नमः।

रात्रि में सोते समय ११ बार पढ़कर सोने से दुःस्वप्न नहीं होता।

ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

इस मन्त्र का आठ हजार जप तथा दूध से हवन करने से धातु रोग नष्ट हो जाता है।

श्री हनुमत जंजीरा मंत्र प्रारम्भ

(१)

ॐ जयति वीर हनुमन्त राम दूत चलो वेगि चलो, लोहे का गदा बज्र का लंगोटा पान का बीरा तेल सिन्दूर की पूजा हं हं हंकार पवन पुत्र काल छं दं छं चक्र हस्त, कुबेर कील, भैरव कील, मशान कील, देवकील, दानव कील, राक्षस कील, ब्रह्म-राक्षस कील, बारह जाती ज्वर कील, छल छिद्र कील, डाकिनी शाकिनी कील, नौ कुली नाग कील, ताप तिजारी कील, देव अचल पृथ्वी कील, मेघ कील, मेरे ऊपर अपघात करै, छाती फाटि मरै, षं षं षं षाती स्वाहा।

(२)

ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ नमो हनुमदाख्य भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो आदेश गुरु को लोहे का काछ, वज्र की काया, हांक देत हनुमन्त आया। नमो हनुमन्ता किरि किरि वन्ता भली बुरी, भली बेर, कानन कुंडल जटाधारी, पहिले ठौर लंका मारी, भैरव बटुक नाथ हंकारी, खेले खेले चौंसठ खण्डा। वज्र का सोंटा, वज्र का काया, वज्र रूप हनुमंत आया। भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, खाई, श्मशान, दृष्टि, उपदृष्टि, घात, लोहा, मेरे पिण्ड-प्राण को

जो बुरो तके सो बेगि मरे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच।

(३)

ॐ नमो आदेश गुरु को राम रक्षा राम दुहाई, ताँबे का कोट ब्रज की खाई, बज्र का अंग, बज्र की चौकी, बज्र उलटा बार खाव, सीताराम राजा रक्षा करैं, रखवारी हनुमंत बीर। सत्य नाम आदेश गुरु को कंठ करै। ॐ वीर महावीर, लोहे की गदा, बज्र का सोंटा, तेल सिन्दूर की पूजा। हुं हुं हुंकार, राम दूत, पवन पूत, बेगि चलि आओ, जैसे रामचन्द्र जी के कार्य करे तैसे मेरे कार्य सारो। चं चं चं चक्र कील, हस्त कील, मस्तक कील, बावन वीर चौंसठि योगिनी भैरव कील, भूत प्रेत दैत्य कील, दानव कील, राक्षस कील, ब्रह्म-राक्षस कील, दृष्टि मुष्टि कील, सर्व रोग पीड़ा, मन बाई, नव नारी बहत्तर कोठे कील, ताप तिजारी कील. एकतरा चौथिया कील, बारह जाति बाघ कील, नव कोटि नाग कील, चोरी चपाट कील, परयंत्र कील, परतंत्र कील, परमंत्र कील, अचला चल भूघर सर्व दिशा कील, नाके घाटे कील, मेडक मसान कील, बैरी दुश्मन कील, कील मेरा कील, जो आघात करे ताकी छाती फाटि मरे, जो इस पिण्ड पर उलटी घाते वाही पर परे। वीर हनुमान रक्षा करैं खं खं खं फट् स्वाहा॥

(४)

ॐ महाबीर बजरंग वीर हनुमंत वीर घोरंत देव दानव टोना टमना यंत्र मन्त्र तंत्र बन्ध बन्ध, सर्व अस्त्र पर शस्त्र

बन्ध बन्ध। द्वादश योजन पर्यन्त शत्रु को दल बन्ध बन्ध। श्री राजा रामचन्द्र जी की सहस्त्राणि आन समुद्र खल मल माया मार लावो, पहार लावो, पर्वत लाओ, संकील लाओ, शंख चक्र लावो, गदा पद्म लावो, धनुष बाण लावो, गढ़ कोट लाओ, ऋद्धि सिद्धि लाओ, जो जो माँगे सो सो लाओ, जो जो कहैं सो सो करो, चलो वीर बजरंग वीर बेगि चलो, लोहे का सोंटा, पद्म का गदा, हाँक मारो बजरंग खड़ा, तेल सिन्दूर मस्तक चढ़ाओ, राजा प्रजा पावन परैं, सात मंगल पूजा करै, दसों कार्य हनुमान जी करैं। कीलों कीलों हस्ती के दाँत कीलों, आसन बैठा योगी कीलों, गद्दी बैठा राजा कीलों, महल बैठी रानी कीलों, गढ़ कीलों, कोट कीलों, खाई कीलों, मरी कीलों, मसान कीलों, भूत कीलों, प्रेत कीलों, पिशाच राक्षस कीलों, अन्तरिक्ष कीलों, यक्ष कीलों, डाकिनी शाकिनी कीलों, करा कराया भेजा कीलों, सर्व पर मंत्र, पर अस्त्र कीलों, द्वादश योजन पर्यन्त कीलों, हाथ मारे हाथ मारों, देह मारै देह मारौं, बल मारै बल मारौं छल मारै छल मारौं, शस्त्र मारै शस्त्र मारौं, अस्त्र मारैं अस्त्र मारौं, दाँव मारैं दाँव मारौं, यंत्र मारै यंत्र मारौं, जो जो मारै सो सो मारौं, हुलनी, कुलनी, डाकिनी, शाकिनी, नारीनर जा को टोना, जादू को, रोग को, दोष को, मार मार करो, भस्म तन मारो तो दुहाई सदा शिव की दुहाई माता अंजनी की, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥

श्री हनुमान विचित्र वीर्य्य मंत्र

ॐ नमो भगवते विचित्र वीर्य्य हनुमते प्रलय कालानल प्रभा ज्वलंत प्रताप बज्र देहाय अंजनी गर्भ सम्भूताय प्रगट विक्रम वीर दैत्य दानव यक्ष, राक्षस ग्रह बंधनाय, भूत ग्रह, प्रेत ग्रह, पिशाच ग्रह, शाकिनी ग्रह. डाकिनी ग्रह, काकिनी ग्रह, कामिनी ग्रह, ब्रह्म ग्रह, ब्रह्म-राक्षस ग्रह, चोर ग्रह बंधनाय, एहि एहि, आगच्छ आगच्छ, आवेशय आवेशय, मम हृदयम् प्रवेशय प्रवेशय, स्फुर स्फुर, प्रस्फुर-प्रस्फुर, सत्यम् कथय कथय, व्याघ्र मुखं बन्धय-बन्धय, शत्रु मुखं बन्धय, बन्धय, लंका प्रसाद भंजनं सर्वजनं में वशं आनय आनय श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वान आकर्षय आकर्षय, शत्रुन मर्दय मर्दय, चूर्णय चूर्णय, खे खे खे श्री रामचन्द्राज्ञया प्रज्ञया, माम कार्य सिद्धिं कुरु कुरु मम शत्रुन भस्मी कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रैं ह्रौं ह्रः फट् विचित्र वीर वीर हनुमते मम सर्व शत्रुन् भस्मी कुरु कुरु हन् हन् हुं फट् स्वाहा॥ इति॥

श्री हनुमान साठिका

दो०- वीर बखानों पवन सुत, जानत सकल जहान।
धन्य धन्य अंजनी तनय, संकट हर हनुमान॥

चौपाई

जय जय जय हनुमान अड़ंगी। महावीर विक्रम बजरंगी॥१॥
जय कपीश जय पवन कुमारा। जय जग वंदन शील अगारा॥२॥
जय आदित्य अमर अविकारी। अरि मर्दन जय जय गिरिधारी॥३॥
अंजनि उदर जन्म तुम लीन्हा। जय जय कार देवतन कीन्हा॥ ४॥
बाजै दुंदुभि गगन गंभीरा। सुर मन हर्ष असुर मन पीरा॥ ५॥

कपि के डर गढ़ लंक सकानी। छूटी बन्दि देवतन जानी ॥६॥
ऋषी समूह निकट चलि आये। पवन तनय के पद सिर नाये॥ ७॥
बार बार अस्तुति करि नाना। निर्मल नाम धरा हनुमाना ॥८॥
सकल ऋषिन मिलि अस मत ठना। दीन बताय लाल फल खाना॥ ९॥
सुनत बचन कपि मन हर्षाना। रवि रथ उदय लाल फल जाना ॥१०॥
रथ समेत कपि कीन अहारा। सूर्य बिना भयो अति अँधियारा॥११॥
बिन तमार सुर मुनि अकुलाने। तब कपीस की अस्तुति ठने॥१२॥
सकल लोक वृत्तान्त सुनावा। चतुरानन तब रवि उगिलावा॥१३॥
कहा बहोरी सुनो बल शीला। रामचन्द्र करिहैं बहु लीला॥ १४॥
तब तुम उन कर करब सहाई। अबहिं बसहु कानन मँह जाई॥१५॥
अस कहि विधि निज लोक सिधारे। मिले सखा संग पवन कुमारे॥१६॥
खेलत खेल महा तरु तोरे। ढेर करै बहु पर्वत फोरे॥१७॥
जेहि गिरि चरण देहि कपि धाई। गिरि समेत पातालहिं जाई॥१८॥
कपि सुग्रीव बालि की त्रासा। निरखत रहे राम मगु आसा॥१९॥
मिले राम तहँ पवन कुमारा। अति आनन्द सप्रेम दुलारा॥२०॥
मणि मुँदरी रघुपति सो पाई। सीता खोज चले शिर नाई॥२१॥
शत योजन जल निधि विस्तारा। अगम अपार देवतन हारा॥ २२॥
जिमि सर गोखुर सरिस कपीशा। लाँघि गये कपि कहि जगदीशा॥२३॥
सीता चरण सीस तिन नाये। अजर अमर के आशिष पाये॥२४॥
रहे दनुज उपवन रखवारी। एक से एक महाभट भारी॥२५॥
तिन्हैं मारि पुनि कहेउ कपीसा। दहेउ लंक कोप्यो भुज बीसा॥२६॥
सिया बोध दै पुनि फिर आये। रामचन्द्र के पद शिर नाये॥२७॥
मेरु उपारि आप छिन माहीं। बाँधे सेतु निमिष एक माहीं॥२८॥
लक्ष्मण शक्ति लागी जबहीं। राम बुलाय कह्यो पुनि तबहीं॥२९॥
भवन समेत सुखेण ले आये। तुरत सजीवन को पुनि धाये॥३०॥
मग मँह कालनेमि कँह मारा। अमित सुभट निशिचर संहारा॥३१॥

आनि सजीवन गिरी समेता। धरि दीन्हों जँह कृपा निकेता ॥३२॥
फनपति केर शोक हरि लीना। बर्षि समुन सुर जय जय कीना ॥३३॥
अहिरावन हरि अनुज समेता। लै गयो तहाँ पाताल निकेता ॥३४॥
जहाँ रहै देवी अस्थाना। दीन चहै बलि काढ़ि कृपाना ॥३५॥
पवन तनय प्रभु कीन गुहारी। कटक समेत निशाचर मारी ॥३६॥
रीक्ष कीशपति सबै बहोरी। राम लखन कीने यक ठोरी ॥३७॥
सब देवतन के बंदि छुड़ाये। सो कीरति सुनि नारद गाये ॥३८॥
अक्षय कुमार दनुज बलवाना। सान केतु कहँ सब जग जाना ॥३९॥
कुम्भकरन रावन कर भाई। ताहि निपात कीन्ह कपिराई ॥४०॥
मेघनाथ पर शक्ति मारा। पवन तनय सब सों वरियारा ॥४१॥
रहा तनय नारान्तक जाना। पल में हत्यो ताहि, हनुमाना ॥४२॥
जहँ लगि मान दनुज कर पावा। पवन तनय सब मारि नसावा ॥४३॥
जय मारुत सुत जय अनुकूला। नाम कृशानु शोक सम तूला ॥४४॥
जहँ जीवन कर संकट होई। रवि तम सम सो संकट सोई ॥४५॥
वंदि परै सुमिरै हनुमाना। संकट कटै धरै जो ध्याना ॥४६॥
जम को बाँधि बाम पद दीन्हा। मारुत सुत व्याकुल बहु कीन्हा ॥४७॥
सो भुज बल का कीन कृपाला। आछत तुम्हें मोर यह हाला ॥४८॥
आरत हरन नाम हनुमाना। सादर सुरपति कीन बखाना ॥४९॥
संकट रहे न एक रती को। ध्यान धरे हनुमान जती को ॥५०॥
धावहु देखि दीनता मोरी। कहौं पवनसुत युग कर जोरी ॥५१॥
कपि पति वेगि अनुग्रह करहू। आतुर आइ दुसह दुःख हरहू ॥५२॥
राम शपथ मैं तुमहिं सुनायो। जवन गुहार लाग सिय जायो ॥५३॥
पैज तुम्हार सकल जग जाना। भव बंधन भंजन हनुमाना ॥५४॥
यह बंधन कर केतिक बाता। नाम तुम्हार जगत सुख दाता ॥५५॥
करौं कृपा जय जय जय स्वामी। वार अनेक नमामि नमामि ॥५६॥
भौमवार कर होम विधाना। धूप दीप नैवेद्य सुजाना ॥५७॥
मंगल दायक को लौ लावै। सुर नर मुनि वाँछित फल पावै ॥५८॥

जयति जयति जय जय जग स्वामी। समरथ पुरुष सु अंतरयामी॥ ५९॥
अंजनि तनय नाम हनुमाना। सो तुलसी के प्राण समाना॥६०॥

दोहा- जय कपीस सुग्रीव तुम, जय अंगद हनुमान।
रामलषन सीता सहित, सदा करो कल्यान॥१॥
बन्दौ हनुमान नाम यह, भौमवार परमान।
ध्यान धरै नर निश्चय पावै पद कल्यान॥२॥
जो नित्त पढ़ै यह साठिका तुलसी कहै विचारि॥
रहे न संकट ताहि को साक्षी हैं त्रिपुरारि॥३॥

॥ इति हनुमान साठिका संपूर्णम् ॥

श्री हनुमान चालीसा

दोहा- श्री गुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥१॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि पुत्र पवन सुत नामा॥२॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥३॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥४॥
हाथ ब्रज औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै॥५॥
संकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग बन्दन॥६॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर ॥७॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लषन सीता मन बसिया॥८॥
सूक्ष्मरूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥९॥
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे॥१०॥
लाय सजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उर लाये॥११॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥१२॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्री पति कंठ लगावैं॥१३॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥१४॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥१५॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा॥१६॥
तुम्हरो मंत्र विभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना॥१७॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥१८॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥१९॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥२०॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥२१॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना॥२२॥
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै॥२३॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥२४॥
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा॥२५॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥२६॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा॥२७॥
और मनोरथ जो कोइ लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै॥२८॥
चारों युग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥२९॥
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे॥३०॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥३१॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा॥३२॥
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै॥३३॥
अन्त काल रघुबर पर जाई। जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई॥३४॥
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥३५॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बल बीरा॥३६॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥३७॥
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बन्दि महा सुख होई॥३८॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥३९॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥४०॥

दोहा- पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

॥ इति॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रबि भक्ष लियो, तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो॥
देवन आनि करी बिनती तब, छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो॥१॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महामुनि साप दियो तब चाहिय कौन विचार बिचारो॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के शोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥२॥

अंगद के सँग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौं हम सो जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगुधारो॥
हरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया सुधि प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥३॥

रावण त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो॥
चाहत सिय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥४॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सुबीर उपारो॥

आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥५ ॥

रावन जुद्ध अजान कियो तब, नागकी फाँस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो ॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥६ ॥

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पाताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र विचारो॥
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥ ७ ॥

काज किए बड़ देवन के तुम, वीर महाप्रभु देखि विचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुम सों नहिं जात है टारो ॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कुछ संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥ ८ ॥

दोहा- लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपिसूर ॥

नागा रामदासजी कृत हनुमानाष्टक

बन्दौं हनुमन्त जेहि ज्ञान बल अन्त नाहिं, रुद्र अवतार सरदार वीर बंका है।
पवन के पूत मजबूत हर बातन में, रामजी के दूत जिन्ह फूँक दीन्ह लंका है॥
भूत प्रेत भंजन सुर सन्त भक्त रंजन कपि, बाजे बल नाम ज्ञान तीन लोक डंका है।
ऐसे हनुमन्त सन्त दीजै भगवंत भक्ति, नागा बलवंत कीश हरन हार शंका है॥१॥
अंजनी कुमार हेम भूधरा समान देह, रुद्र अवतार सोच संकट निकन्दना।
प्रबल प्रचण्ड रूप महावीर नाम सुनि, भूत भागि जात छूट जात भ्रम फन्दना॥
दुष्ट को दलन वीर धीर गदा वज्र धर, साधु सन्त हेतु मानों शीतल सो चन्दना।
ऐसो हनुमन्त भगवन्त के सपूत दूत, हूजिये दयालु नागा दास करै वन्दना॥२॥

मर्कटाधीश हनुमान को नाम सुनि, भूत वैताल सब सोच भाजै।
वीर बजरंग जब गदा और वज्र धर, लाल-लाल नैन कसै पीत पागै॥
कमर लंगोटा कस ताल को ठोंक जब, वीर बजरंग सो कौन लागै।
जय महावीर कर जोर नागा खड़े, देहु हरि भक्ति क्या और माँगै॥३॥
जहँ मारुत नन्दन आप बसै नित, राम जन्म की भूमि अवधपुर माँही।
जिनके हिय में धनुबाण लिये, सियराम बसैं दिन रैन सदाहीं।
दोऊ हाथ में वज्र गदा धरि कै, खल नाश करैं जन लेत बचाही।
कहै दास नगा धनि बाँके बली, हनुमान गढ़ी सो गढ़ी कहुँ नाहीं॥४॥
शीश पै टोपी लंगोट कसै कटि, कानन में दुहुँ कुण्डल छाजै।
भाल विशाल जनेऊ गले शुभ, लोचन मस्तक चन्दन साजै॥
दुहुँ हाथन वज्र गदा झमकै छवि, देखत ही दुख दारिद भाजै।
कहै दास नगा धनि बांके बली, हनुमान गढ़ी मँह वीर बिराजै॥५॥
बजरंग बली अस ना चहिये, तुम्हरे आछत दुःख पावत हौं।
धन धाम कुटुम्ब छुड़ाय दियो, सबके दरबार फिरावत हौं॥
कोउ देखि हँसे कोउ गारी बकै, सबकै मुख थोपि खिलावत हौ।
जब दसास नगा के सहायक हौ, तब काहे न आस पुरावत हौ॥६॥
जब भीत गिरे से बचाय लियो तब, दुष्ट से क्यों न बचावत हौ।
मँह मारिक रोग निरोग कियो खल, रोग से क्यों न छुड़ावत हौ॥
जब संकट मोचन नाम सही तब, क्यों मोहि कष्ट सहावत हौ।
जब दास नगा के सहायक हो तब, काहे न आस पुरावत हौ॥७॥
हे पवन तनय गुण गावत हौं, चित्त दैके कृपा करिये हनुमाना।
दुसर कौन बखान सकै गुण, रामलला जब आप बखाना॥
भूत पिशाच नगीच न आवत, जो सुमिरे दुख दूर पराना।
कहै दास नगा धनि बांके बली,अब मोपर होहु दयालु सुजाना॥८॥

दोहा- यह अष्टक हनुमान को पढ़े सुनै जो कोय।
नागा सुख सम्पत्ति लहै. युग युग हरिजन होय॥

॥ इति॥

श्री बजरंग बाण

दोहा- निश्चय प्रेम प्रतीत ते विनय करै सम्मान।
तेहि के कारज सकल शुभ सिद्ध करैं हनुमान॥

चौपाई

जय हनुमंत संत हितकारी। सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी॥१॥
जन के काज विलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै॥२॥
जैसे कूदि सिन्धु महि पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥३॥
आगे जाइ लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुर लोका॥४॥
जाइ विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा॥५॥
बाग उजारि सिन्धु मँह बोरा। अति आतुर यमकातर तोरा॥६॥
अक्षय कुमार को मारि सँहारा। लूम लपेटि लंक को जारा॥७॥
लाह समान लंक जरि गई। जै जै ध्वनि सुर पुर में भई॥८॥
अब विलम्ब केहि कारण स्वामी। कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी॥९॥
जै जै लक्ष्मण प्राण के दाता। आतुर होइ दुःख करहु निपाता॥१०॥
जै गिरिधर जै जै सुख सागर। सूर समूह समरथ भट नागर॥११॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरिहिं मारू वज्र सम कीले॥१२॥
गदा वज्र लै बैरिहिं मारो। महाराज निज दास उबारो॥१३॥
सुनि हंकार हुंकार दै धावो। वज्र गदा हनु विलम्ब न लावो॥१४॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा॥१५॥
सत्य होहु हरि सत्य पाइके। रामदूत धरु मारु धाइके॥१६॥
जै हनुमन्त अनन्त अगाधा। दुःख पावत जन केहि अपराधा॥१७॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत है दास तुम्हारा॥१८॥
वन उपवन जल थल गृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥१९॥
पाँय परौं कर जोरि मनावों। अपने काज लागि गुण गावों॥२०॥
जय अंजनी कुमार बलवंता। शंकर स्वयम् वीर हनुमन्ता॥२१॥
बदन कराल दनुज कुल घालक। भूत पिशाच प्रेम उर शालक॥२२॥

भूत प्रेत पिशाच निशाचर। अग्नि वैताल वीर मारी मर ॥ २३ ॥
इन्हौं मारु तोहि शपथ राम की। राखु नाथ मर्याद नाम की ॥ २४ ॥
जनक सुता पति दास कहावो। ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥ २५ ॥
जै जै जै ध्वनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुख नाशा ॥ २६ ॥
शरण शरण कर जोरि मनावों। यहि अवसर अब केहि गोहरावों ॥ २७ ॥
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई। पाँय परों कर जोरि मनाई ॥ २८ ॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥ २९ ॥
ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ॥ ३० ॥
अपने जन को कस न उबारो। सुमिरत होत अनन्द हमारो ॥ ३१ ॥
ताते विनती करौं पुकारी। हरहु सकल प्रभु विपति हमारी ॥ ३२ ॥
ऐसो बल प्रभाव प्रभु तोरा। कस न हरहु दुःख संकट मोरा ॥ ३३ ॥
हे बजरंग बाण सम धावो। मेटि सकल दुःख दरश दिखावो ॥ ३४ ॥
हे कपिराज काज कब ऐहौं। अवसर चूकि अन्त पछितैहौं ॥ ३५ ॥
जनकी लाज जात एहि बारा। धावहु हे कपि पवन कुमारा ॥ ३६ ॥
जयति जयति जय जय हनुमाना। जयति जयति गुण ज्ञान निधाना ॥ ३७ ॥
जयति जयति जय जय कपिराई। जयति जयति जय जय सुखदाई ॥ ३८ ॥
जयति जयति जय राम पियारे। जयति जयति जय सिया दुलारे ॥ ३९ ॥
जयति जयति मुद मंगल दाता। जयति जयति त्रिभुवन विख्याता ॥ ४० ॥
यहि प्रकार गावत गुण शेषा। पावत पार नहीं लवलेशा ॥ ४१ ॥
नाम रूप सर्वत्र समाना। देखत रहत सदा हरषाना ॥ ४२ ॥
विधि शारदा सहित दिन राती। गावत कपि के गुण गण पाती ॥ ४३ ॥
तुम सम नहीं जगत बलवाना। करि विचार देखेउँ विधि नाना ॥ ४४ ॥
यह जिय जानि शरण तब आई। ताते विनय करौं चित्त लाई ॥ ४५ ॥
सुनि कपि आरत बचन हमारे। मेटहु सकल दुःख भ्रम भारे ॥ ४६ ॥
यहि प्रकार विनती कपि केरी। जो जन करै लहैं सुख ढेरी ॥ ४७ ॥
या के पढ़त वीर हनुमाना। धावत बाण तुल्य बलवाना ॥ ४८ ॥
मेटत आय दुःख क्षण माहीं। दे दर्शन रघुपति ढिंग जाहीं ॥ ४९ ॥

पाठ करै बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करैं प्राण की ॥५०॥
दीठ मूठ टोनादिक नाशै। परकृत यंत्र मंत्र नहिं त्रासै ॥५१॥
भैरवादि सुर करैं मिताई। आयसु मानि करैं सेवकाई ॥५२॥
प्रण कर पाठ करे मन लाई। अल्प मृत्यु ग्रह दोष नसाई ॥५३॥
आवृत ग्यारह प्रतिदिन जापै। ताकि छाँह काल नहिं चापै ॥५४॥
दै गुगुल की धूप हमेशा। करै पाठ तन मिटै कलेशा ॥५५॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै। ताहि कहौ फिर कौन उबारै ॥५६॥
शत्रु समूह मिटै सब आपै। देखत ताहि सुरासुर काँपै ॥५७॥
तेज प्रताप बुद्धि अधिकाई। रहै सदा कपिराज सहाई ॥५८॥

दोहा- प्रेम प्रतीतहिं कपि भजै सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज तुरत ही सिद्ध करैं हनुमान॥

॥ इति ॥

श्री हनुमान ग्यारहीं स्तोत्र

अंजनी तनय बलवीर रण बाँकुरो,
करत हों अर्ज दोउ हाथ जोरी।
शत्रु दल साज के चढ़े चहुँ ओर से,
तकी इन पाँति किन भाँति मोरी॥
करत जो चुगलई मोर दरबार में,
लेहु तेहि झपट मत करहु देरी।
मातु की आन तोहिं सुनो प्रभु कान दै,
अंजनी सुवन मैं शरण तेरी ॥१॥
पवन के पूत अवधूत रघुनाथ प्रिय,
सुनो यह अर्ज महाराज मेरी।
अहै जो मुद्दई मोर संसार में,
करौं अंगहीन तेहि डारू पेरी॥

करत जो चुगलई मोर दरबार में,
करहु तेहि चूर लंगूर फेरी।
पिता की आन तोहिं सुनो प्रभु कान दे,
पवन के सुवन मैं शरण तेरी॥२॥
राम के दूत आतुल्य बल कीशपति,
कहत हौं टेरि नहिं करत चोरी।
और कोउ सुभट नहिं प्रगट तिहुँलोक में,
सकै जो नाथ सों नैन जोरी॥
करत जो चुगलई मोर दरबार में,
लेहु तेहि पकड़ धरि शीश तोरी।
इष्ट की आन तोहिं सुनो प्रभु कान दै,
राम के दूत मैं शरण तेरी॥३॥
केशरीनन्द सब अंग बजरंग जेहि,
लाल मुख रंग तन तेज कारी।
कपिस बरकेश है विकट अति भेष है,
दंड दोउ चंड प्रण ब्रह्मचारी॥
करत जो चुगलई मोर दरबार में,
करौ तेहि गर्द दल मर्द डारी।
केसरी की आन तोहिं सुनो प्रभु कान दै,
वीर हनुमान मैं शरण तेरी॥४॥
लियो है आन जब जनम या जगत में,
हन्यो है असुर सुर शान्तकारी।
मारि के दनुज कुल दहन कियो हेरि के,
दल्यो ज्यों सिंह गजराज घेरी॥
करत जो जुगलई मोर दरबार में,
हनो तेहि हुमक मत करौ देरी।

तोर ही आन तोहिं सुनो प्रभु कान दै,
वीर हनुमान मैं शरण तेरी ॥५ ॥
नाम हनुमान तोहिं जानत जहान सब,
कूदि कै सिन्धु गढ़ लंक घेरी।
गहन उजारि रिपु मान सब मथन करि,
जारयो है नगर नहिं कियो देरी॥
करत जो चुगलई मोर दरबार में,
लेहु तेहि खाय फल सरिस हेरी।
तब जोर की आन तोहिं सुनो प्रभु कान दै,
वीर हनुमान मैं शरण तेरी ॥६ ॥
गयो है पैठि पाताल महि फारि कै,
मारि कै असुर दल कियो ढेरी।
पकड़ि अहिरावणहिं अंग सब तोरि कै,
राम औ लखन की काट बेरी॥
करत जो चुगलई मोर दरबार में,
करौ तेहि निधन धन लेहु फेरी।
रुद्र की आन तोहिं सुनो प्रभु कान दै,
वीर हनुमान मैं शरण तेरी ॥७ ॥
लागी है शक्ति अनन्त उर घोर अति,
परयो महि मूर्च्छित कछु भई बेरी।
चल्यो है गर्जि के धरयो हैं द्रोण गिरि,
लियो है उपारि नहिं लाग देरी॥
करत जो चुगलई मोर दरबार में,
पटक तेहि अवनि लंगूर फेरी।
लखन की आन तोहिं सुनो प्रभु कान दै,

वीर हनुमान मैं शरण तेरी ॥८॥

हन्यो है हुमकि हनुमान कालनेमि को,
हन्यो है तुरत अपसरा हेरी।
लायो है औषधि छिन में पवन सुत,
कह्यो कपि रिक्ष जै जयति टेरी॥
करत जो चुगलई मोर दरबार में,
हनो तेहि गदा हठि वज्र फेरी।
सहस्त्रफण आन तोहिं सुनो प्रभु कान दै,
वीर हनुमान मैं शरण तेरी॥९॥

केसरी किशोर रणवीर बरजोर अति,
सोहे कर गदा अति प्रबल तेरी।
जासु की हाँक सुनि डरत सुर लोक पति,
छूटत समाधि त्रिपुरारि केरी॥
करत जो चुगलई मोर दरबार में,
देहु तेहि कचर धरि कर दरेरी।
भ्रात की आन तोहिं सुनो प्रभु कान दै,
वीर हनुमान मैं शरण तेरी॥१०॥

लियो हरि सिया दुख दिया है प्रभुहिं सुख,
आप से कई बार मैं दहेरी।
ज्ञान की वृद्धिकर वाक्य यह सिद्ध कर,
पैज करू पूर कपिन्द्र मेरी॥
करत जो चुगलई मोर दरबार में,
लेहि तेहि दौर मत करौ देरी।
सिया की आन तोहिं सुनो प्रभु कान दै,
वीर हनुमान मैं शरण तेरी॥११॥

कवित्त ग्यारहों पूरि के प्रगट भयो,
आप कल्याण कारी।
दी है राम की भक्ति वरदान मोहिं,
भयो मन मोद आनन्द भारी॥
और जो चाहिये तोहिं सो माँगिले,
देहुं अब तुरत नहिं करौं देरी।
जौन तू चाहेगा तैसहीं होयगा,
यह सत्य तू मान ले बात मेरी॥१२॥
ग्यारहों जो कहेगा तुरत फल लहेगा,
बढ़ेगी वंश की वृद्धि भारी।
शत्रु जो चढ़ेगा आप लड़ मरेगा,
होयगी अंग से पीर न्यारी॥
पाप नहिं रहेगा रोग सब दहेगा,
दास भगवान यह कहत टेरी।
जौन तू चाहेगा तैसहीं होयगा,
यह सत्य तू मान ले बात मेरी॥१३॥
यह मंत्र उच्चरेगा तेज तन बढ़ेगा,
करेगा ध्यान कपि रूप आनी।
एक दस. रोज नर पढ़ेगा पौढ़कर,
करै पर हाथ नहीं अन्न पानी॥
भौम के वार को लाल पट्टु धारिके,
करै प्रभु से मन ब्रत ठानी।
शत्रु का नाश तब होय तत्काल ही,
दास भगवान यह सत्य मानी॥१४॥
जयति बात संजात, जयति रवि मंडल ग्रासक।
जयति सन्त सुर सुखद, जयति निश्चर कुल नाशक॥

जयति विजय मद हरन, जयति सिय शोक निवारन।
जयति वीर रणधीर, जयति सब कष्ट विदारन॥१५॥

सोरठा- जयति जासु उर बसत नित, रघुकुल मणि सर चाप धर।
सोई प्रभु सेवक जानि के, करौं कृपा अब दास पर॥

॥ इति॥

श्री बजरंग बत्तीसी

ऐसो ओज सुजस विराजै महिं मंडल में,
परम प्रचण्ड तन तेज कोटि भानु को।
जाकी कर कीरति बखानें राम आप मुख,
शेषहु न गाय सकें ताके गुन गान को।
रसिक बिहारी सुखदायक सदा ही वीर,
दूजो जग माँहि दानी करुना निधान को।
दीनन को त्राता मोद मंगल विधाता बहु,
ऋद्धि सिद्धि दाता वन्दौं नाम हनुमान को॥ १॥
बन्दर हठीलो जाहि डरत पुरन्दर से,
मन्दर उठायो जिन पूरन प्रमान को।
जाकी सुन हाँक गिरि कन्दर परात खल,
परम प्रचण्ड बल धीर बलवान को॥
पवनपूत नामलेत अन्दर से भागैं दुष्ट,
नासैं विघ्न वीर सम सुन्दर सुजान को।
रसिक बिहारी सुखदाता त्राता दीनन को,
उद्धत अनूप वन्दौं रूप हनुमान को॥२॥
संकट हरन दुष्ट दानव दरन छल।
छिद्र के छरन सोक सिन्धु के तरन हैं।
अम्बुज वरन बहु वित्त के भरन वेगि,
औढ़र ढरन दीन पालन करन हैं॥

असरन सरन सुभक्त उद्धरन जोग,
जंग के लरन पूरी पैज के परन हैं।
रसिक बिहारी हेतु सुफल फरन सदा,
ऐसे कपि केसरी किशोर के चरन हैं॥ ३ ॥
जाते लंक दहन कियो हैं होलिका समान,
जाते दल्यो दाप मेघनाद से सुभट को।
कण्ठ गत प्रान दस कण्ठ को कियो है जाते,
जाते काल नेमि को लपेटि भूमि पटको॥
जाते खल झुण्डन के मुण्डबिनु कीन रुण्ड,
जाते कोटि गर्विन को गर्व महि झटको।
सोई सदा रसिक बिहारी सुखकारी वन्दौं,
विकट लंगूर हनुमान मरकट को॥ ४ ॥
दाता हैं अतुल जन त्राता वरी बंड बहु,
दुष्टन के घाता है प्रचंड सों घनेरे हैं।
रसिक बिहारी के कलेस के निपाता सदा,
भक्त भय हाता चहुँ एही निरबेरे हैं।
केसरी किशोर रणजोर बरजोर वीर,
पकरि पछारै विघ्न जेते सब नेरे हैं।
बैरी बल भंजा उद्ध खल दल गंजा धीर,
दीन मन रंजा ऐसे पंजा जुग तेरे हैं॥ ५ ॥
गिरि सों गंभीर मान हरन सुवीरन के।
बैरिन बिदीरन कों वज्र सो करेरो हैं।
पव्वै सो परे हैं खल झुंडन के मुंडन पै,
परम प्रचंडित उदंड सो घनेरो हैं।
उद्धत अपार जाके बल को न पारावार,
रसिक बिहारी दीन रक्षक निवेरी हैं।

केसरी कुमार निज वीरता विचार वीर,
दुष्ट हर जुष्ट रुष्ट पुष्ट मुष्ट तेरी हैं॥६ ॥
भंजत अरिष्ट कोटि अति उत्कृष्ट रहै,
दुष्टन बलिष्टन पै क्रुद्धित करेरी हैं।
दीन को अभिष्टन को पूरित वरिष्ट वेगि,
अमित गरिष्ट इष्टवान हित हेरी है॥
दृष्ट को अदृष्ट औ अदृष्ट हूँ को दृष्ट करै,
उत्पत्ति औ पालक संहार सृष्टि केरी है।
अधिक कुदृष्ट सदा रहत मलिष्टन पै,
रसिक विहारी पै सुदृष्ट दृष्ट तेरी है॥७ ॥
तोंहि सो सकल काज आज लौ भये हैं मेरे,
दीनन के हेतु कबहूँ न भूलि ना करे।
केसरी किशोर बल विदित जहाँन माहीं,
रसिक बिहारी पैज पूरी चहुँधा करे॥
मोसे निराधारन पै अंजनी कुमार नित,
आपने उदंड जुग पंजन की छाँ करे।
एरे वीर बाँकुरे भरोसो एक आँकरे,
सदा ही तेरी हाँक रे सहाय होत साँकरे॥८ ॥
तेरे ही किये ते सब अमर निसंक भये.
तेरे ही किये ते कपिराज राज पायो है।
तेरे ही किये ते धीर धारी उर जानकी जू,
तेरे ही किये ते रण राम जस छायो है॥
तेरे ही किये ते वीर लक्ष्मण के प्राण रहे,
चारों वेद तेरो ही अखण्ड गुन गायो है।

रसिक विहारी सदा तेरे ही भरोसे रहै,
ताके काज हेतु यों विलम्ब क्यों लगायो है॥९॥

आरत पुकार हैं बार बार तेरे द्वार,
पवन कुमार तों उदारता कहाँ भई।
कुग्रह कुजोग रोग दारिदजु दुष्ट लोग,
दल मल डार या कठोरता कहाँ लई॥
तेरो बल विदित उदंड महि मंडल में,
रसिक विहारी हेतु धीरज कहाँ ठई।
आनन्द बढ़ाय दे दिखाय दे अपार वित्त,
वीर हनुमान तेरी वीरता कहाँ गई॥१०॥

कैंधो वीर थकित भयो है सब अंग तुव,
कैंधों कलिकाल को प्रभाव हिय हूलिगो।
कैंधों हनुमान हारि हिम्मत डरानों बहु,
कैंधों काहु बली को हिये में बल सूलिगो॥
रसिक बिहारी की बिसारी सुधि पौनपूत,
कपट घनेरो अब कैंधों उर झूलिगो।
कैंधों भक्त दीनन ते रुठन ही रहन लाग्यो,
कैंधों बलवान तोहिं तेरी बल भूलिगो॥११॥

कीधौं काहू करि पठायो जंत्र मंत्र कीधौं
कीधौं काहू ग्रह की प्रचंड बाधा आई है।
कीधौं सीत पित्त कफ कोपि के दियो है दुःख,
कीधौं कहा जानों कछु पूरब कमाई है॥
तेरो मैं कहाय वीर पावत अचैन ऐसो,
अंजनी कुमार तोहि सकुचन आई है।
रसिक बिहारी को कलेश सब दूर करे,

एरे राम दूत तब तेरी वीरताई है॥ १२ ॥

अच्छ को बिदारो कालनेमि को पछारो वीर,
विपिन उजारो पुर जारो दस माथ को।
कारो मेघनाद को त्रिकूट को उखारो गढ़,
लंक को बिथारो कहे तेरो गुन गाथ को॥
रसिक बिहारी दुख टारो नेक तो निहारो,
अंजनी दुलारो काज सारो तुव हाथ को।
समरथ वारो कहा मेरी वार हारो तू तो,
दीन रखवारो दूत प्यारो रघुनाथ को॥ १३ ॥

सुजस अपारो तिहुँ लोक में प्रचारो भारो,
सब गुन वारो वीर दायक अनन्द को।
रसिक विहारी पैज पूरन करन वारो,
मंगल भरन वारो विविध प्रवन्द को॥
संकट हरन वारो दुष्टन दरन वारो,
उद्धत छरन वारो छुद्र छल छन्द को।
समरथ वारो कहा मेरी वार हारो,
तू तो दीन रखवारो दूत प्यारो रघुनन्द को॥ १४॥

तू तो वीर सुखद सदा ही दीन दासन को,
रसिक विहारी हेतु सम्पत्ति की सै करै।
मुष्टन से मारि के विदारत अतुष्टन को,
जोम जुष्ट रुष्ट पुष्ट दुष्टन की छै करै॥
चर्व चर्व डारत अखर्व गर्व गर्विन को,
विघ्न कै कृतघ्न को मारि विघ्न तै करै।
एरे हनुमान बलवान गुन के निधान ,
वेगि हो सहाय मेरी तू हीं नित्य जै करै॥ १५॥

गावत घनेरो बल तेरो चहुँ वेदन में,
अंजनी कुमार वीर विरद अनूठो है।
सोई सुन मैं तो तुव द्वार पै पुकार करी,
आज लौ सुनी ना कछु मो पै कहा रूठो है॥
रसिक बिहारी अभिलाष पूरि दै कपीस,
देर क्यों लगाई काहे मोसें यों अतूठो है।
मेरो दुःख दारिद अराति जौन दूरि कियो,
जानो हनुमान हौं तिहारो जस झूठो है॥ १६ ॥
तू ही राम सीता सकल काज कीन्हें सदा,
रसिक बिहारी दिस हेर कृपा कोर तू।
तू ही सब ठौर में सहाय करी दीनन की,
रहौ बलवान नित भक्तन की ओर तू॥
तेरो ही जू एक अवलंब बलवंत मोहिं,
वेग हीं घनेरे सुख साज काज जोर तू।
केसरी किशोर रणरोर बरजोर काहे,
बन्दी छोर विरद विसार भो कठोर तू॥ १७ ॥
मारि डारु वैरिन विदारी डारु दुष्टन को,
फारि डारु फंदन और मूढ़न को वारि डारु।
झार डारु झटकि झपाट खल झुण्डन को,
रसिक विहारी के आरति को उपारि डारु॥
गारि डारु गर्विन के गर्व को उजारि डारु,
जारि डारु जोमिन की जोम को बिगारि डारु।
जौ पै हनुमान वीर साँचो बलवान तो पै,
शत्रु को लंगूर में लपेटि के पछारि डारु॥ १८ ॥
पकरि बिथोरि डारु वैरिन के झुंडन को.

फोरि डारि खोपरी सु अंग झकझोरि डारु।
तोरि डार ग्रीवा गहि रसना मरोरि डारु,
हाड़न हलोरि डारु कर पद झोरि डारु॥
उदर विलोरि डारु उर को अरोरि डारु,
फोरि डारु कंठ कटि दन्तन दरोरि डारु।
नैन श्रौन नासिकान छोरि डार शत्रुन की,
जोम की धंधोरि डारु गहि मुख मोरि डारु॥१९॥
खाय लै खखेटी वीर दीर्घ दल दुष्टन को,
बैरिह्न लंगूर में लपेटि के पटकि दे।
मुंड फोरि ग्रीवा झकझोरि के मरोरि मुख,
हृदय विथोरि सब अंग ही झटकि दे॥
सहित सहाय रिपु मण्डली नसाय वेगि,
गर्विन को गर्व काल फाँस में फटकि दे।
रसिक विहारी पैज पालिदे कपीस ईस,
मेरे दावादार को विदारी के हटकि दे॥२०॥
बैरिन को खाय ले करेजा काटि दाँतन ते.
दलिडार लातन ते देह दुष्ट गन की।
तुच्छन को पटकि लपेटि पुच्छ गुच्छ माहीं,
पकरि मरोरि डार जीभ जुगलन की॥
पंजन ते भंजि डारु वेगि अभिमानिन को,
रोष ते जराउ प्रबलाई दुर्दिनन की।
कुग्रह कुजोग आधि व्याधि सब मर्दि डारु,
आन हनुमान तो को राम और लखन की॥२१॥
दारिद दबाय के पठाय दे पाताल पेलि,
दोष दुख दूरि करि संकट को काटि दे।

दुर्दिन दपेटि के चपेटि डारु चिन्ता सब,
राहु गुरु चन्द्र ग्रह बाधा हति डाटि दे॥
रसिक विहारी दिसि हेर कृपा करि वीर,
बेगि मूरि वित्त पूरि शोक सिन्धु फाटि दे।
उद्धत उदार धीर अंजनी कुमार वीर,
बैरिन की मंडली समूल ते उपाटि दे॥२२॥
बंध जीभ निन्दक प्रमादी और चबाइन की,
बंध डीठ मूठ भूत प्रेम रोग बंध बंध।
बंध दोख परकृत जंत्र मंत्र तंत्र बंध,
भानु भौम मन्द आदि कुग्रह सुबंध बंध॥
बंध बुद्धि दुष्टन की वाक्य बंध गति बंध,
दल खल झुण्डन के कर पद बंध बंध।
बंध विष दाढ़ नख शृंग शस्त्र अस्त्र सबै,
बेगि बजरंग कुरु चराचर बंध बंध॥२३॥
बंध बंध अनल आकास जल थल बंध,
जोगिनी मसान जक्ष गन्धर्व बंध बंध।
बंध बंध साकिनी और डाकिनी पिचासिनी को,
बंध वीर दानवास्त्र ब्रह्म देव बंध बंध॥
बंध बंध काल और कराल बैरि बंध बंध,
दीर्घ दुख दारिद जू दुर्दिन को बंध बंध।
बंध बंध सकल सकल खल झुण्डन को,
बेगि हनुमन्त कुरु दुष्ट दल बंध बंध॥२४॥
जैसे वीर पकरि पछारो अच्छ को प्रतच्छ,
जैसे कालनेमि को लपेटि भूमि पारो है।
जैसे मेघनाद को बिहाल करि डारो हाल,

जैसे अहिरावनै चरण चापि मारो है॥
जैसे बेगि सुरसा को उदर बिगारो कपि,
जैसे ह्वै निसंक बंक लंक गढ़ जारो है।
तैसे यह वैरी को बिथारो केसरी कुमार,
स्वबल विचार कहा मेरी बार हारो है॥ २५ ॥
याद कर कैसी वीरता ते जरायो लंक,
याद कर कैसी वीरता से अच्छ मारो है।
याद कर कैसी वीरता ते सिन्धु नाँघ्यो वीर,
याद कर कैसे कालनेमि को पछारो है॥
याद कर कैसी वीरता ते तूँ उजारो वन,
याद कर कैसे अहिरावन बिदारो है।
केसरी कुमार सोई वीरता विचार निज,
एकै बार काहे बलवान बल हारो है॥ २६ ॥
सम्पत्ति घनेरी चहुँ ओर ते भरा ते ढिग,
आदर दिवादे और बढ़ा दे जस नाम को।
पकरि प्रचण्डन को पाँय पै परा दे मेरे,
पास में पठा दे नर नारी अभिराम को॥
मो बस करा दे सब धनिक प्रवीन बहु,
सहित कुटुम्ब नृप मण्डली ललाम को।
रसिक बिहारी को मनोरथ पूजा दे वीर,
जौ पै हनुमान दूत साँचा सियाराम को॥ २७ ॥
गारि दे गरूर नूर झारि दे जु गर्विन को,
सहित सहाय रिपु मंडली उजारि दे॥
जारि दे सुधाम ग्राम द्रोहिन को झारि मारि,
दम्भी द्रोह दुष्टन को मूल ते उपारि दे॥

पारि दे विपत्ति बेगि बैरिन के झुंडन पै,
चुगुल चवाइन को बाँधि के विडारि दे।
डारि दे मदधन को पाँय तर मेरे वीर,
रसिक विहारी कलि कीरति विगारि दे॥२८॥
कोप करि मारे तूँ तो सकल अरातिन को,
तूँ ही मन मोहे नर नारिन को जाय के।
दोष दुःख दारिद कलेस को उघारै तूँ हीं,
आकर के तूँ हीं सुख सम्पत्ति बढ़ाय दे॥
तूँ हीं अस्तम्भै मुख वाक्य विकरालन के,
वस्य कर तूँही सबही को वीर धाय के।
रसिक विहारी विजै तूँहीं बहु ठौर राखै,
केसरी किशोर हो सहाय मेरी आय के॥२९॥
इच्छित मिला दे बहुत जस बगरा दे वीर,
वित्त सरसादे दरसादे तूँ आनन्द को।
बुद्धि को बढ़ा दे सनमान को दिवादे बेगि,
पैजहि पुरा दे और दुरादे छल छन्द को॥
रसिक विहारी काज आज की करादे निज,
प्रभुता जानादे तोको कौल रघुचन्द्र को।
राम की दुहाई दे निहारों हनुमान तोहिं,
आन मान जो पै दूत साँचो रघुनन्द को॥३०॥
देहि वरदान वीर सम्प्रति यथेच्छितं हि,
करू चानुकम्पां तव चरणौ भजाम्यहम्।
दुर्जनानि भंजय विभंजय सुदुर्दिनानि,
ऋण ध्वाञ्जनेय दीन वचसा वदाम्यहम्॥
झटित गृहाण भोऽनिलात्मजतवासनाय,
कलुष दरिद्रा रात योहि प्रददाम्यहम्।

पूरय सुवित्तं रसिके शस्यानुमोदं,
दातु पवनात्मजो मां पातु शिरसानमाम्यहम् ॥ ३१ ॥
मा कुरु विलंबं वीर शकटा दुधारयासु,
दासोऽहं तवास्मीत्यभि याचतोऽपिदीनोऽहम्।
दिक्ष वितनोतु कीर्ति विपुलां तनातु,
लक्ष्मीं देहि रसिके शस्याभिलाषं त्वदधीनोहम् ॥
निर्भयो हि भूमौ विचरामि भवदा श्रयेण,
सकल सुकर्म-मन-वचनाम्मलीनोऽहम्।
करुणा कटाक्षेण वलोकय वयं भो,
कपेनानयं भावयामि पवनात्मजविहीनोऽहम् ॥ ३२ ॥

॥ बजरंग बत्तीसी सम्पूर्णम् ॥

समर्थ श्रीरामदास जी कृत

संकष्ट निरसनं

भीम रूपी महारुद्रा वज्र हनुमान मारुति।
बनारी अंजनी सूता रामदूता प्रभंजना ॥ १ ॥
महाबली प्राणदाता संकड़ा उठवी बड़ें।
सौख्यकारी दुःखहारी दूत वैष्णव गायका ॥ २ ॥
दीनानाथ हरीरूपा सुन्दरा जग दंतरा।
पाताल देवता हंता भव्य सिन्दूर लेपना ॥ ३ ॥
लोकनाथा जगन्नाथ प्राणनाथा पुरातना।
पुण्यवन्ता पुण्यशीला पावना परितोषका ॥ ४ ॥
ध्वजाग्री उचली बाहो आवेशय लोटला पुढ़े।
कालाग्नि काल रुद्राग्नि देखतां कांपती भये ॥ ५ ॥
ब्रह्माण्ड भाइले नेणों आवड़े दंत पंगती।
नेत्राग्नि सालिल्या ज्वाड़ा भृकुटी त्राटिला बड़े॥ ६ ॥

पुच्छिले मुर्डिले माथा किरीटी कुंडले वरी।
सुवर्ण कटि कांसोटी घंटा किंकिणि नागरा॥७ ॥
ठकारे पर्वता ऐसा नेटका सड़ पातड़ा।
चपलांग पाहता मोठे महाविद्युल्लते परी॥८॥
कोटिंच्या कोटि उड्डाणें झेंपावै उत्तर कड़े।
मंद्राद्रि सारिखा द्रोण क्रोधें उत्पाटिला बड़े॥९॥
आड़िला मागुता नेला आला गेला मनोगती।
मनासि टाकिलें मागे गतीसी तुलना कसे॥१०॥
अणु पासोनी ब्रह्माण्डा येवड़ा होत जात से।
तयासि तुलना कोठे मेरू मँदार धाकुटे॥११॥
ब्रह्माण्डा भोंवते बेढ़े वज्र पुच्छें करूँ सके।
तयासि तुलना कैसी पाहतां पाहतां नसे॥१२॥
आरक्त देखिलें द्रोड़ा ग्रासिले सूर्य्य मंडला।
बाढ़तां बाढ़तां बाढ़े भेदिले शून्य मण्डला॥१३॥
धन धान्य पशु वृद्धि पुत्र पौत्र समग्रही।
पावती रूप विद्यादि स्तोत्र पाठे करुनियाँ॥१४॥
भूत प्रेम समंधादी रोग व्याधि समस्तही।
नासती तुटती चिन्ता आनन्दे भीम दर्शने॥१५॥
हीधरा पन्द्रह श्लोकी लाभली शोभली बरी।
दृढ़ देही न सन्देही संख्या चन्द्र कला गुणे॥१६॥
ऐसे हैं स्तोत्र महात्म्य पठती जपती सदा।
मारुतिच्या प्रसादेन भुक्ति मुक्ति सदा लभें॥१७॥
रामदासी अग्रगण्यं कपि कुलासि मंडड़ा।
रामरूपी अन्तरात्मा दर्शनें दोष नासती॥१८॥

॥ इति॥

श्री हनुमान बाहुक

छप्पय -

सिंधु तरन, सिय-सोच-हरन, रबि-बालबरन-तनु।
भुज बिसाल, मूरति कराल कालहुको काल जनु॥
गहन - दहन - निरदहन - लंक निःसंक, बंक-भुव।
जातुधान - बलवान - मान - मद-दवन पवनसुव॥
कह तुलसिदास सेवत सुलभ, सेवक हित संतत निकट।
गुन गनत, नमत, सुमिरत, जपत, समन सकल संकट बिकट॥१॥
स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन।
उर बिसाल, भुजदंड चंड नख बज्र बज्रतन॥
पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन।
कपिस केस, करकस लँगूर, खल-दल बल भानन॥
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट।
संताप पाप तेहि पुरुष पहिं सपनेहुँ नहिं आवत निकट॥२॥

॥झूलना॥

पंचमुख-छमुख-भृगुमुख्य भट-असुर-सुर,
सर्व-सरि-समर समरत्थ सूरो।
बाँकुरो बीर बिरूदैत बिरुदावली,
बेद बंदी बदत पैजपूरो॥
जासु गुन गाथ रघुनाथ कह जासु बल,
बिपुल-जल-भरित जग-जलधि झूरो।
दुवन-दल-दमनको कौन तुलसीस है,
पवन को पूत रजपूत रूरो॥३॥

॥ घनाक्षरी ॥

भानु सों पढ़न हनुमान गये भानु मन,
अनुमानि सिसुकेलि कियो फेरफार सो।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन ,
क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो॥
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि,
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो।
बल कैंधौं बीररस, धीरज कै, साहस कै,
तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो॥४॥
भारत में पारथ के रथकेतु कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो।
कह्यो द्रोन भीषम समीर सुत महाबीर,
बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो॥
बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि,
फलँग फलाँगहूँतें घाटि नभतल भो।
नाइ-नाइ माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं,
हनुमान देखे जगजीवन को फल भो॥५॥
गोपद पयोधि करि होलिका ज्यों लाई लंक,
निपट निसंक परपुर गलबल भो।
द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कंदुक ज्यों कपिखेल बेल कैसो फल भो॥
संकट समाज असमंजस भो रामराज,
काज जुग-पूगनिको करतल पल भो।
साहसी समत्थ तुलसीको नाह जाकी बाँह,
लोकपाल पालनको फिर थिर थल भो॥६॥

कमठकी पीठि जाके गोड़निकी गाड़ैं मानो,
नापके भाजन भरि जलनीधि-जल भो।
जातुधान-दानव परावन को दुर्ग भयो,
महामीनबास तिमि तोमनि को थल भो॥
कुंभकर्न-रावन पयोदनाद-ईंधन को,
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।
भीषम कहत मेरे अनुमान-हनुमान,
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो॥७॥
दूत रामरायको सपूत पूत पौनको तू,
अंजनी को नंदन प्रताप भूरि भानु सो।
सीय सोच समन, दुरित दोष दमन,
सरन आये अवन, लखनप्रिय प्रान सो॥
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबेको भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।
ज्ञान-गुनवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो॥८॥
दवन-दुवन-दल भुवन बिदित बल,
बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को।
पाप-ताप-तिमिर तुहिन विघटन-पटु,
सेवक सरोरुह सुखद भानु भोरको॥
लोक-परलोकतें बिसोक सपने न सोक,
तुलसी के हिये हैं भरोसो एक ओर को।
रामको दुलारो दास वामदेव को निवास,
नाम कलि-कामतरु केसरी किसोर को॥९॥

महाबल-सीम महाभीम, महाबानइत,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को।
कुलिस-कठोरतनु जोरपरै रोर रन,
करुना-कलित मन धारमिक धीरको॥
दुर्जन को कालसो कराल पाल सज्जनको,
सुमिरे हरनहार तुलसीकी पीरको।
सीय-सुखदायक दुलारो रघुनायकको ,
सेवक सहायक है साहसी समीर को॥१०॥
रचिबेको बिधि जैसे, पालिबेको हरि, हर,
मीच मारिबेको, ज्याइबेको सुधापान भो।
धरिबेको धरनि, तरनि तम दलिबेको,
सोखिबे कृसानु, पोषिबे को हिम-भानुभो॥
खल-दुख दोषिबेको, जन-परितोषिबेको,
माँगिबो मलीनता को मोदक सुदान भो।
आरत की आरति निवारिबे को तिहूँ पुर,
तुलसी को साहेब हठीलो हनुमान भो॥११॥
सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँकको।
देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बापुरे बराक कहा और राजा राँकको॥
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँकको।
सब दिन रुरो परै पूरो जहाँ तहाँ ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँकको॥१२॥

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि,
तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी।
केसरी किसोर बंदीछोर के नेवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधान की।
बालक-ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की॥१३॥

करुना निधान, बलबुद्धि के निधान, मोद,
महिमानिधान, गुन ज्ञान के निधान हौ।
बामदेव-रूप, भूप राम के सनेही, नाम,
लेत-देत अर्थ-धर्म काम निरबान हौ॥
आपने प्रभाव, सीतानाथ के सुभाव सील,
लोक-बेद-बिधि के बिदुष हनुमान हौ।
मनकी, वचनकी, करमकी तिहूँ प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ॥१४॥

मनको अगम, तन सुगम किये कपीस,
काज महाराजके समाज साज साजे हैं।
देव-बंदीछोर रनरोर केसरी किसोर,
जुग-जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं॥
बीर बरजोर, घटि जोर तुलसी की ओर,
सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे हैं।
बिगरी सँवार अंजनी कुमार कीजे मोहिं,
जैसे होत आये हनुमानके निवाजे हैं॥१५॥

॥सवैया॥

जानसिरोमनि हौ हनुमान सदा जनके मन बास तिहारो।
ढारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो॥
साहेब सेवक नाते ते हातो कियो सो तहाँ तुलसी को न चारो।
दोष सुनाये तें आगेहुँ को होशियार ह्वै हों मन तौ हिय हारो॥१६॥

तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिरको कपि जे घर घाले।
तेरे निवाजे गरीब निवाज बिराजत बैरिन के उर साले॥
संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरी के से जाले।
बूढ़ भये बलि मेरिहि बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले॥१७॥

सिंधु तरे, बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंक से बंक मवा से।
तैं रन-केहरि केहरिके बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से॥
तो सों समत्थ सुसाहेब सेइ सहै तुलसी दुख दोष दवा से।
बानर बाज बढ़े खल खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवा से॥१८॥

अच्छ-बिमर्दन कानन-भानि दसानन आनन भा न निहारो।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-से कुंजर केहरि-बारो॥
राम-प्रताप-हुतासन, कच्छ, बिपच्छ, समीर समीर दुलारो।
पापतें, सापतें ताप तिहूँतें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो॥१९॥

॥ घनाक्षरी॥

जानत जहान हनुमान को निवाज्यौ जन,
मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिये।
सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये॥
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति,

मोदक मरै जो, ताहि माहुर न मारिये।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीरजूके,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये॥ २०॥
बालक बिलोकि, बलि, बारेतें आपनो कियो
दीनबंधु दया कीन्हीं निरूपाधि न्यारिये।
रावरो भरोसो तुलसी के, रावरोई बल,
आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिये॥
बड़ो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो,
माथे पगु बली को, निहारि सो निवारिये।
केसरी किसोर, रनरोर, बरजोर बीर,
बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये॥ २१॥
उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरीकुमार बल आपनो सँभारिये!
रामके गुलामनिको कामतरु रामदूत,
मोसे दीन दूबरे को तकिया तिहारिये॥
साहेब समर्थ तोसों तुलसी के माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये।
पोखरी बिसाल बाँहु, बलि बारिचर पीर,
मकरी ज्यौं पकरिकै बदन बिदारिये॥ २२॥
राम को सनेह, राम साहस लखन सिय,
रामकी भगति, सोच संकट निवारिये।
मुद मरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे,
जीव-जामवंत को भरोसो तेरो भारिये॥
कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें
सुथल सुबेल भालु बैठिकै बिचारिये।

महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न,
लंकिनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिये ॥ २३ ॥
लोक-परलोकहूँ तिलोक न बिलोकियत,
तोसे समरथ चष चारिहूँ निहारिये।
कर्म, काल, लोकपाल, अग-जग जीवजाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये॥
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये।
बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु बेलि,
उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये ॥ २४ ॥
करम-कराल-कंस भूमिपालके भरोसे,
बकी बकभगिनी काहूतें कहा डरैगी।
बड़ी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,
बाँहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी॥
आई है बनाइ बेष आप ही बिचारि देख,
पाप जाय सबको गुनीके पाले परैगी।
पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपिकान्ह तुलसी की,
बाँहपीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी ॥ २५ ॥
भालकी की कालकी कि रोष की त्रिदोष की है,
बेदन बिषम पाप-ताप छलछाँह की।
करमन कूटकी कि जंत्रमंत्र बूटकी,
पराहि जाहि पापिनी मलीन मनमाँहकी॥
पैहहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि,
बावरी न होहि बानि जानि कपिनाँहकी॥

आन हनुमान की दोहाई बलवान की,
सपथ महाबीर की जो रहै पीर बाँहकी ॥ २६ ॥
सिंहिका सँहारि बल, सुरसा सुधारि छल,
लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है।
लंक परजारि मकरी बिदारि बारबार,
जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है॥
तोरि जमकातरि मदोदरि कढ़ोरि आनी,
रावनकी रानी मेघनाद महँतारी है।
भीर बाँहपीर की निपट राखी महाबीर,
कौन के सकोच तुलसी के सोच भारी है॥ २७ ॥
तेरो बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीरसुधि सक्र-रबि-राहुकी।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहुकी॥
साम दान भेद बिधि, बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथहीके चोटी चोर साहुक़ी।
आलस अनख परिहासकै सिखावन है,
एते दिन रही पीर तुलसी के बाहुकी ॥ २८ ॥
टूकनिको घर घर डोलत कँगाल बोलि,
बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है॥
कीन्ही है सँभार सार अंजनी कुमार बीर,
आपनों बिसारिहैं न मेरेहू भरोसो है॥
इतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु,
कपिराज साँचो कहौं को तिलोक तोसो है।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास,

चीरी को मरन खेल बालकनिको सो है॥२९॥
आपने ही पापतें त्रितापतें कि सापतें,
बढ़ी है बाँहबेदन कही न सहि जाति है।
औषध अनेक जंत्र-मंत्र-टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधिकाति है॥
करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो रामदूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पिराति है॥३०॥
दूत रामराय को, सपूत पूत बायको,
समत्थ हाथ पायको सहाय असहाय को।
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मुठिका के घायको॥
एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आज,
सीदत सुसेवक वचन मन कायको।
थोरी बाँहपीर की बड़ी गलानि तुलसी को,
कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभायको॥३१॥
देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम,
रामदूत की रजाइ माथें मानि लेत हैं॥
घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनूमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं।
क्रोध कीजे कर्म को प्रबोध कीजे तुलसी को,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं॥३२॥

तेरे बल बानर जिताये रन रावनसों,
तेरे घाले जातुधान भये घर-घरके।
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,
सकल समाज साज साजे रघुबरके॥
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरंचि हरि हरके
तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिये न दास दुखी तोसे कनिगरके॥ ३३ ॥
पालो तेरो टूकको परेहू चूक मूकिये न,
कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये।
भोरानाथ भोरेही सरोष होत थोरे दोष,
पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये॥
अंबु तू हौं अंबुचर, अंब तू हौं डिंभ, सो न,
बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसीकी बाँह पर लामीलूम फेरिये॥ ३४ ॥
घेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,
बासर जलद घन घटा धुकि धाई है।
बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस,
रोष बिनु दोष, धूम-मूल मलिनाई है।
करुनानिधान हनुमान महाबलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजें तैं उड़ाई है।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,
केसरी किसोर राखे बीर बरिआई है॥ ३५ ॥

सवैया

रामगुलाम तुही हनुमान गोसाँइ सुसाँइ सदा अनुकूलो।
पाल्यो हौं बाल ज्यों आखर दू पितु मातु सों मंगल मोद समूलो॥
बाँहकी बेदन बाँहपगार पुकारत आरत आनँद भूलो।
श्री रघुबीर निवारिये पीर रहौं दरबार परो लटि लूलो॥३६॥

॥ घनाक्षरी ॥

कालकी करालता करम कठिनाई कीधौं,
पापके प्रभावकी सुभाय बाय बावरे।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,
सोई बाँह गही जो गही समीरडावरे॥
लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भो तयो है तिहूँ तावरे।
भूतनिकी आपनी परायेकी कृपानिधान,
जानियत सबहीकी रीति राम रावरे॥३७॥
पाँयपीर पेटपीर बाँहपीर मुँहपीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है।
देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहिपर दवरि दमानक सी दई है॥
हौं तो बिन मोल के बिकानों बलि बारेही तें,
ओट रामनाम की ललाट लिखि लई है।
कुंभजके किंकर बिकल बूड़े गोखुरनि,
हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है॥३८॥

बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि,
मुँहपीर-केतुजा कुरोग जातुधान हैं।
राम नाम जपजाग कियो चहों सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं॥
सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ,
जिनके समूह साके जागत जहान है।
तुलसी सँभारि ताड़का-सँहारि भारी भट,
बेधे बरगद से बनाइ बानवान हैं॥३९॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
रामनाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं।
पर्‍यो लोकरीतिमें पुनित प्रीति रामराय,
मोहबस बैठो तोरि तरकितराक हौं॥
खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अंजनीकुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं।
तुलसी गोसाइँ भयो भोंड़े दिन भूलि गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं॥४०॥
असन - बसन - हीन विषम - विषाद - लीन,
देखि दीन दुबरो करै न हाय-हाय को।
तुलसी अनाथसो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सीलसिंधु आपने सुभाय को॥
नीच यहि बीच पति पाइ भरुहाइगो,
बिहाइ प्रभु-भजन बचन मन कायको।
तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि-फूटि निकसत लोन रामराय को॥

जिऔं जग जानकी जीवन को कहाइ जन,
मरिबेको बारानसी बारि सुरसरि को।
तुलसीके दुहूँ हाथ मोदक है ऐसे ठाउँ,
जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको॥
मोको झूठो साँचो लोग राम को कहत सब,
मेरे मन मान है न हरको न हरिको।
भारी पीर दुसह सरीरतें बिहाल होत,
सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करिको॥४२॥

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेसको महेस मानो गुरुकै।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुरकै॥
ब्याधि भूतजनित उपाधि काहू खलकी,
समाधि कीजे तुलसीको जानि जन फुरकै।
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै॥४३॥
कहों हनुमान सों सुजान रामराय सों,
कृपानिधान संकरसों सावधान सुनिये।
हरष विषाद राग रोष गुन दोषमई,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये॥
माया जीव काल के करमके सुभायके,
करैया राम बेद कहैं साँची मन गुनिये।
तुम्हतें कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि,
हौं हूँ रहों मौन ही बयो सो जानि लुनिये॥४४॥

आरती नं० (१)

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जाके बलसे गिरिवर कांपै। रोग दोष भय निकट न झाँकै॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजीके काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पाताल तोरि जमकारे। अहिरावन के, भुजा उखारे॥
बांये भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे॥
सुरनर मुनिजन आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई॥
जो हनुमानजी की आरती गावें। बसी बैकुण्ठ अमर पद पावै॥
लंका बिध्वंस किये रघुराई। तुलसीदास स्वामी कीरति गाई॥

आरती नं० (२)

ॐ जय हनुमत वीरा, स्वामी जय हनुमत वीरा॥
संकटमोचन स्वामी, तुम हो रण धीरा॥ॐ॥
पवन पुत्र अंजनि सुत, महिमा अति भारी॥
दुःख दरिद्र मिटाओ, संकट भव हारी॥ॐ॥
बाल समय में तुमने, रवि को भक्ष लियो।
देवन स्तुति कीन्हीं, तबही छोड़ दियो॥ॐ॥
कपि सुग्रीव राम संग, मैत्री करवाई।
बालि बली मरवाय, कपिसहिं गद्दी दिलवाई॥ॐ॥

जारि लंक को ले सिय की सुधि, वानर हर्षाये॥
कारज कठिन सुधारे, रघुवर मन भाये ॥ॐ॥
शक्ति लगी लक्ष्मण के, भारी सोच भयो।
लाय सजीवन बूटी, दुःख सब दूर कियो॥ॐ॥
ले पाताल अहिरावण, जबहीं पैठि गयो।
ताहि मारि प्रभु लाये, जय जयकार भयो॥ॐ॥
हनुमानगढ़ी महँ शोभित, दर्शन अति भारी।
मंगल और शनिचर, मेला है जारी॥ॐ॥
श्री संकट मोचन की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत इन्द्र हर्षित, मन वाँछित फल पावै॥ॐ॥

॥ इति ॥ ॥

॥ श्री हनुमान जी की जन्म कालीन प्रार्थना ॥

जय जय हनुमन्ता प्रिय भगवन्ता श्रुति सन्ता हितकारी।
मर्कट बपुधारी जय असुरारी वनचारी अघहारी॥
जय अंजनि लाला देह विशाला पवन पूत बलभारी।
लोचन अरुनारे राम दुलारे लंकेश्वर भयकारी॥
माता ढिग जाई अति लरिकाई भोजन मिस मचलाई।
जननी मुस्काई भानु दिखाई जब छाई अरुणाई॥
तेहि को फल जान्यो तुरत उड़ान्यो गहि मुँख माँहिं दबाई।
सुरराज रिसाये बज्र चलाये परे अवनि अकुलाई॥
सुत पवन उठाये हृदय लगाये गिरिवर गुहा समाये।
गति हीन बनाये सब अकुलाये सुर नर मुनि तहँ आये॥

मिलि अस्तुति कीन्हाँ कपि कहँ चीन्हा पृथक-पृथक वर दीन्हाँ।
सब शस्त्र प्रभावा मुक्त बनावा गात बज्र सम कीन्हाँ॥
जब कपि सुग्रीवा अति बल सींवा भ्राता से भय पाई।
कहुँ मुक्ति न पाई जब कपिराई गिरिवर गुहा लुकाई॥
तब प्रभु हनुमाना जिय अनुमाना सुन्दर युक्ति बनाई।
रघुवीरहि लाये ताहि बुझाये सो तब कीन्ह मिताई॥
तेहि के दुःख गाई प्रभुहि सुनाई दुखित भये रघुराई।
पुनि कीन्ह उपायो बालि नशायो ताहि कियो कपिराई॥
सत्योजन सागर कपि गुण आगर लांघि गये वहि पारा।
सीना सुधि लाये लंक जराये रावण सुत संहारा॥
घननाद रिसायो शक्ति चलायो, मूर्छि परे शह सीसा।
अंजनि सुन धायो गिरि धरि लायो प्राण बचे जगदीशा॥
संकट जेहि घेरे कपि कहँ टेरे जो अपने मन लाई।
महि देव पुकारे सब दुःख टारे रामभक्त कपिराई॥

दोहा- भाव सहित सुमिरन करै कपि केसरी कुमार।
भक्तन के हित हेतु प्रभु सदा रहत तैयार॥

श्री सद्गुरु चालीसा

दोहा- हृदय सरोवर में खिलैं, भाँति भाँति के फूल॥
प्रभु को ना अर्पण करूँ, तो मेरी है भूल॥
प्रथम गजानन को सुमिरि, सुमिरहुँ कौशलनाथ।
जनक लली के पद कमल, सदा नवावहुँ माथ।
सद्गुरु चालीसा लिखूँ, गौरि महेश मनाय।
मातु शारदा बुद्धि दें, मेरी करहु सहाय॥
सद्गुरु पूरण ब्रह्म हैं, सद्गुरु पूरण अवतार।
जाऊँ सद्गुरु ऊपरो, बार बार बलिहार॥

(चौपाई)

श्री गुरुदेव दया के सागर। ब्रह्मा शिव समान गुण आगर॥
विष्णु रूप सम तेज प्रकाशै। मोह निशा दर्शन ये नाशै॥
श्री गुरुदेव दीन हितकारी। भव भय भंजन जन दुःखहारी॥
मन मानस में करहिं उजाला। पल में काटि देय भव जाला॥
गुरु महिमा जानत कोउ नाहीं। सुर नर मुनि सब यतन कराहीं॥
सद्गुरु की महिमा है भारी। ध्यान धरै सुर नर मुनि झारी॥
मात पिता भाई सुत नारी। गुरु समान नहिं कोउ हितकारी॥
संकट से गुरुदेव बचावैं। मन क्रम वचन नित्य जो ध्यावै॥
गुरु के चरन कमल चित लावै। सुख सम्पत्ति जग में यश पावै॥
गुरु चरनन की है बलिहारी। सादर सेवत सब नर नारी॥
गुरु समान है देव न दूजा। राम कृष्ण नित करते पूजा॥
बिन गुरु कृपा तरै नहिं कोई। नारि पुरुष सचराचर होई॥
बंदऊँ गुरु पद कमल समाना। शीश नवाय धरै नित ध्याना॥
जिन चरनन को सब कोई ध्यावत। शेष, महेश, पार नहिं पावत॥
सद्गुरु के पद की नख ज्योति। सुमिरत शान्ति हृदय में होती॥
मोह निशा से गुरु जगावैं। दुःख दरिद्र सब दूर भगावै॥
ज्ञान प्रकाश करैं पल माहीं। गुरु समान दाता कोउ नाहीं॥
चौरासी गुरुदेव बचावैं। भव सागर से पार लगावैं॥
गुरु का ध्यान धरै जो कोई। मन वांछित फल पावै सोई॥
हृदय सिंहासन में पधरावै। पुष्प माल गले पहिरावै॥
सादर जल लै चरन पखारै। धूप दीप आरती उतारै॥
भक्ति भाव से भोग लगावै। गुरु चरनन में शीश झुकावै॥
गुरू आज्ञा मानें जो कोई। ता सम और भक्त नहिं होई॥
गुरू का दर्शन मंगलकारी। चरन कमल की है छवि भारी॥
गुरु के सन्मुख जो कोई आवै। ताकी बुद्धि शुद्ध होइ जावै॥
सद्गुरु की लीला है न्यारी। घट घट में फैली उजियारी॥

गुरु की महिमा कैसे गाऊँ। कौन भाँति मैं उन्हें रिझाऊँ॥
तामस तन कुछ साधन नाहीं। भक्ति विवेक न कुछ मनमाहीं॥
बिन गुरु ज्ञान विवेक न होई। गुरु की कृपा पाव कोई कोई॥
गुरु का नाम लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नसाहीं॥
बन्दऊँ गुरु पद बारम्बारा। जासु कृपा उतरिय भव पारा॥
राम नाम नित मुख से लीजै। गुरु वचन अमृत रस पीजै॥
गुरु से विमुख सदा जो रहहीं। सपनेहुँ ते सुख सुयश न लहहीं॥
गुरु के वचन नहीं विश्वासा। सुख की व्यर्थ करै नर आशा॥
गुरु की सहनशीलता देखी। उपजी उर में प्रीति विशेषी॥
कृपा पुरुषोत्तम गुरुदेव हमारे। भक्तन के सब कारज सारे॥
प्रथम पुष्प लै भेंट चढ़ाऊँ। सादर चरनन में सिर नाऊँ॥
बालक जानि क्षमा प्रभु कीजै। अनपायनी भक्ति मोहिं दीजै॥
कहहिं सुनहिं जे गुरु चालीसा। विजय विभूति देंय जगदीशा॥
सद्गुरु चालीसा जो गावै। सब सुख भोग परम पद पावै॥

दोहा- यह चालीसा, श्री गुरुदेव भगवान का,
परमहंस राम मंगल दास, कृपानिधान का।
पाठ करै जो कोई, निश्चय हो कल्यान,
सकल सुख पावै यहाँ, फिर जावै उनके धाम॥

॥ इति॥

श्री गुरु आरती

ओऽम् जय जय गुरु देवा।
जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी, स्वामी दीनन हितकारी,
जय जय मोह विनाशन, जय जय मोह विनाशन, भव बन्धनहारी!
ओऽम् जय जय गुरु देवा ......
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुरु मूरतिधारी, स्वामी गुरु मूरतिधारी,
वेद पुरान बखानत, वेद पुरान बखानत, गुरु महिमा भारी!
ओऽम् जय जय गुरु देवा ......

जप तप तीरथ संयम, दान विविध दीन्हें, स्वामी विविध दीन्हें,
गुरु बिन ज्ञान न होवे, गुरु बिन ज्ञान न होवे, कोटि जतन कीन्हें!
ओऽम् जय जय गुरु देवा ......
माया मोह नदी जल, जीव बहे सारे, स्वामी जीव बहे सारे,
नाम जहाज बिठाकर, नाम जहाज बिठाकर, गुरु पल में तारे!
ओऽम् जय जय गुरु देवा ......
काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारी, स्वामी चोर बड़े भारी,
ज्ञान खड्ग दे कर में, ज्ञान खड्ग दे कर में गुरु सब संघारी!
ओऽम् जय जय गुरु देवा ......
नाना पंथ जगत में निज निज गुण गावे, स्वामी निज निज गुण गावै,
सबका सार बताकर, सबका सार बताकर गुरु मारग लावै!
ओऽम् जय जय गुरु देवा ......
गुरु चरणामृत निर्मल सब पातक हारी, स्वामी सब पातक हारी।
वचन सुनत तम नासै वचन सुनत तम नासै सब संशय टारी॥
ओऽम् जय जय गुरु देवा ......
तन मन सब अर्पण गुरु चरणनन कीजै, स्वामी गुरु चरणनन कीजै।
ब्रह्मानन्द परम पद, ब्रह्मानन्द परमपद, मोक्ष गती लीजै॥
ओऽम् जय जय गुरु देवा ......

गुरुदेव भगवान की स्तुति

श्री गुरु चरण सरोज रज बन्दिन मैं कर जोरि।
विघ्न मिटै प्रगटै विभव होय विमल मति मोरि॥
गुरु को कीजै दण्डवत कोटि कोटि परणाम।
कीट न जाने भृंग को गुरु करलें आप समान॥
जेहि खोजत ब्रह्मा थके सुर नर मुनि अरु देव।
कह कबीर सुन साधवा कर सतगुरु की सेव॥
गुरु को शिर पर राखि के चलिये आज्ञा माँहि।

कह कबीर ता दास को तीन लोक डर नाँहिं॥
गुरु मानुष कर जानते चरणामृत को पान।
ते नर नरके जायेंगे जन्म जन्म है स्वान॥
मैं अपराधी जनम का नख शिख भरा विकार।
तुम दाता दुःख भंजना मेरी करो सम्भार॥
भक्ति दान मोहि दीजिए गुरु देवन के देव।
और कछु ना चाहिए निशदिन तुम्हरी सेव॥
गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दिये बताय॥
श्री गुरु महिमा को कहैं अतिहि ऊँच मुकाम।
ताते गुरु पद को करौं बार बार परणाम॥
बन्दे बोध मयं नित्यं गुरुं शंकर रुपणम्।
यमाश्रितोहि वक्रोऽपि चन्दः सर्वत्र बन्द्यते॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वर।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥
अखण्ड मण्डलाकारं व्यापतं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।
ध्यान मूलं गुरोमूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा॥
ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षिमूतम्।
भावातीतं त्रिगण रहितं सद्गुरुं तं नमामि॥
सीता नाथ समारम्भां रामानन्दार्य मध्यमाम्।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरुं परम्पराम्॥

॥ इति॥

आरती श्री बद्रीनारायण जी की

पवन मन्द सुगन्ध शीतल, हेम मन्दिर शोभितम्।
निकट गंगा बहत निर्मल, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥
शेष सुमिरन करत निशदिन, धरत ध्यान महेश्वरम्।
श्री वेद ब्रह्मा करत अस्तुति, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥
शक्ति गौरि गणेश, शारद नारद मुनि उच्चारणम्।
योग ध्यान अपार लीला, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर, धूप दीप प्रकाशितम्।
सिद्ध मुनिजन करत जय जय, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
यक्ष किन्नर करत कौतुक, ज्ञान गंधर्व प्रकाशितम्।
श्रीलक्ष्मी कमला चँवर डोलै, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥
कैलाश में एक देव निरंजन, शैल शिखर महेश्वरम्।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
श्री बद्रीनाथ के पंच रत्न, पढ़त पाप विनाशनम्।
कोटि तीरथ भवत पुण्ये, प्राप्तये फल दायकम्॥

श्री नवग्रह शान्ति महामन्त्र

(महामन्त्र जोई जपत महेसू)

दोहा – रामहिं में सब रमि रहेउ, राम रमहिं सब माहिं।
याते श्री रामहिं भजे, सब सुर गण हर्षाहिं॥

चौपाई

बन्दों परम पूज्य-भगवान्। राम समर्थ भानुकुल-भानू॥
रामचन्द्र नित अमल-अनूपा। बन्दों सोइ कोशलपुर भूपा॥
मंगल आपु नाम मंगल कर। बन्दों राम अमंगल अघहर॥

प्रणवों राम परम सुखधामा। जासु सर्व विद्या बुधनामा ॥
सुर गुरु तथा तिहुँपुर स्वामी। जय श्रीराम नमामि नमामी ॥
कलि नृप कुटिल निधन भृगुनायक। जै जै शरण पाल सब लायक ॥
खलन केरि सर्वस्व निकन्दन। बन्दों राम नाम-रविनन्दन ॥
बन्दों राम विदित सब-काहू। सुरन्ह हेतु रावण शशि राहु ॥
दोहा- दीन दयालु कृपायतन, नामी नाम समेतु।
द्रवउ जानि निज शरण मोहिं, बन्दों रघुकुल केतु ॥
प्रभु महिमा जिय जानि बड़, हरिजन जपहिं जे याहि।
ग्रह बाधा नहिं बांधिहैं, सर्व सुलभ सुख ताहि॥

॥ सम्पूर्णम् शुभम् भूयात् ॥

॥ इति ॥

॥ अथ श्री चाक्षुषमति विद्यां ॥

ॐ अस्य श्री चाक्षुषमति विद्यां अहर्बुधन्या ऋषि अनुष्टुप छन्दः श्री सूर्यो देवता मम चक्षु रोग निवृत्तिये जपे विनियोगः ।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजो स्थिरोभव। मां पाहि पाहि त्वरितं चक्षु रोगान शमय शमय। मम् जात रूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाऽहं अन्धो नस्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्व जन्मोपार्जितानि चक्षु प्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वानि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुःतेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकराय मृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माअमृतं गमय। उष्णो

भगवाञ्छचि रूपः। हंसो भगवान शुचि प्रतिरूप। य इमा चक्षुष्मती विद्यां ब्रह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षि रोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्रह्मणान् ग्राहयित्वा विद्या सिद्धिर्भवति। ॐ विश्वरूपं घृणिनं जात वेदस हिरण्मय पुरुष ज्योतिरूपं तपन्तम्। विश्वस्य यानि प्रतपन्तमुग्रं पुरः प्रजानांमुदयत्येष सूर्यः। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिन्य होवाहिनी स्वाहा। ॐ वयं सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रिय मेधा ऋषयो नाघ मानाः। अपध्वान्त भूर्णूहिपूर्द्धि चक्षुर्मुग्ध्यस्मान्निमेव वद्धान। पुण्डरीकाक्षाय नमः। पुष्करेक्षणाय नमः। अमलेक्षणाय नमः। कमलेक्षणाय नमः। विश्वरूपाय नमः। महाविष्णवे नमः। (१२ पाठ करें)

ॐ ह्रीं हंसः। पाठ के आदि में ६ माला तथा अन्त में ५ माला जप करना चाहिए।

विधि

काँसे के पात्र में हल्दी की स्याही तथा अनार की कलम से ३२ का यंत्र बनावें। उस पर ताँबे का चार मुँह का दीपक जलावें। धूप-दीप नैवेद्य से पूजन करें। इससे शीघ्र लाभ होगा। माला भी हल्दी की होनी चाहिए।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

कृपा पुरुषोतम राम मंगल दास महाराज
परमहंस